श्रीमद् धनञ्जयकवि विरचिता

धनञ्जय नाम माला

(सार्थ)

-सम्पादक-

मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ

जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 420
ISBN 978-93-84003-08-1

श्रीमद् धनञ्जयकवि विरचिता

नाम माला सार्थ

(आदर्श टीका सहित)

–सम्पादक –

मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष
(अमृत महोत्सव-2013-2014) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website: www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail: jambudweeptirth@gmail.com
Facebook: jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फाल्गुन कृ. चतुर्दशी, 28 फरवरी 2014 भगवान वासुपूज्य जन्मजयंती	28/-रु.

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

मध्यमा कोर्स–साहित्य विषय की पाठ्यक्रम पुस्तक

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

Scanned by CamScanner

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, गोत्र–गोयल, नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ७० मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism.com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

Scanned by CamScanner

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

-जीवन प्रकाश जैन, समन्वयक

सन् 1972 में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से **दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान** की स्थापना की गयी। इस संस्थान ने अपने इतिहास में अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार-विकास-ग्रंथों के प्रकाशन व राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनेकानेक भव्य आयोजन आदि करके सदा जैन संस्कृति की प्रभावना की। इसी क्रम में वर्ष-2010 में संस्थान द्वारा **गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र** की स्थापना की गयी। जिसमें प्रतिवर्ष हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया एवं अपनी शिक्षा के अनुरूप प्रमाण-पत्र भी प्राप्त किये। पुनः वर्ष 2013 से विशेष उपलब्धिपूर्वक इस संस्थान द्वारा शिक्षा केन्द्र का संचालन **तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय-मुरादाबाद** के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है।

इस शिक्षा केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य जैन श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के ज्ञान से अभिसिंचित करना एवं उन्हें समाज में लब्ध प्रतिष्ठित करने हेतु विशेष सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री के माध्यम से सम्मानित करना है। इस शिक्षा केन्द्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कोर्स संचालित किये गये हैं, जिसे निम्नावली के अनुसार सभी श्रावक-श्राविकाएँ ज्ञानाराधना के लिए ज्वाइन कर सकते हैं। पूज्य माताजी का यह मार्मिक चिंतन है कि जैनधर्म के बंधुओं को सांसारिक व लौकिक ज्ञान के साथ ही जैनधर्म का ज्ञान अवश्यरूप से होना चाहिए, क्योंकि जैनधर्म के सिद्धान्तों को जानकर ही हमारी आत्मा विशुद्धि को प्राप्त करती है एवं धर्म के ये संस्कार आगामी अनेक भवों तक प्रत्येक आत्मा का मोक्षमार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें संसार भ्रमण से दूर करने में सहयोगी बनते हैं।

"ज्ञानामृतं भोजनं" अर्थात् ज्ञानरूपी अमृत ही आत्मा का भोजन है, यही इस शिक्षा केन्द्र का मूल उद्देश्य है। पाठकगण इन परीक्षा कोर्स में अभिरुचि के साथ भाग लेकर जैनधर्म के "सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, साहित्य व विधिविधान" से संदर्भित ज्ञान को प्राप्त करते हुए प्रवेशिका/मध्यमा/विशारद/शास्त्री/आचार्य के सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री आदि प्राप्त करके जैनधर्म की महती प्रभावना के साथ अपनी यशकीर्ति को भी दिग्दिगंतव्यापी बनायें, ऐसी प्रेरणा है।

कार्यालय-दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.-01233-280184, मो.-09411025124

E-mail : onlineccjs@gmail.com, Website : www.jambudweep.org

Scanned by CamScanner

तालिका (कुंजी)

१—ग्रन्थकार का नाम—इस पुस्तक के रचयिता का नाम श्रीमान् कवि शिरोमणि 'धनञ्जय कवि' है।

२—इस संस्करण में संशोधन बहुत हुआ है। इससे मूल पद्यों में कोई भी विद्वान् हमसे पूछे बिना परिवर्तन नहीं करें।

३—'नाममाला' नाम का प्रयोजन—जैसे एक माला में बहुत से फूल होते हैं, उसी प्रकार इस पुस्तक में एक वस्तु के अनेक-अनेक नाम बतलाये गये हैं। इसलिये इसको 'नाममाला' कहते हैं।

४—नाममाला का परिमाण—इस ग्रन्थ में उद्देश्यमूलक (नामबोधक) सिर्फ २०० दो सौ पद्य हैं।

५—लिंगपरिज्ञान—जिस चिह्न के कारण पुरुष को पुरुष, स्त्री को स्त्री और हिजड़े (खसुवे) को नपुंसक कहते हैं उन चिह्नों की जिन वस्तुओं में सम्भावना हो तद्वाचक शब्दों का प्रायः वही लिंग होता है। किन्तु यह नियमित नियम नहीं है—अप्, दारा कलत्र, गृह, प्राकार और बाण इत्यादि शब्दों में इस नियम का उल्लंघन हो जाता है। फिर भी छात्रों को इस नियम से लिंग के ज्ञान में पर्याप्त सहायता प्राप्त होती है।

६—उत्तरार्ध के अध्ययनकर्त्ताओं को 'अनेकार्थ-नाममाला' भी उपस्थित करना चाहिये, क्योंकि उससे भी प्रश्न आने लगे हैं।

७—पाठकों को ऐसे और भी प्रश्न संगृहीत कर छात्रों से स्वयं प्रश्न करना चाहिये।

८—पद्य के अन्तिमाक्षर को पकड़ कर तुकबन्दी-मौखिक पद्य बोलना छात्रों के लिए लाभदायी होगा।

९—इस पुस्तक में पु० से पुंलिंग, स्त्री० से स्त्रीलिंग, न० से नपुंसक लिंग, अ० से अव्यय और त्रि० से तीनों लिंग जानना।

—मोहनलाल शास्त्री

Scanned by CamScanner

विषयानुक्रमणिका

नाम	श्लोक	नाम	श्लोक
अँगरखे के नाम	१६८	ऊँचे नीचे का नाम	१८५
अँगुलि के नाम	१००	ऊँचे के नाम	१५६
अग्नि के नाम	६४, ६५	ऊँट के नाम	६१
अचानक के नाम	१८२	ओष्ठ के नाम	१०१
अन्धकार का नाम	१४६	कटाक्ष के नाम	६६
अफवाह के नाम	१५६	कठोर के नाम	१५६
अभ्यास के नाम	१८८	कदली का अर्थ	१८३
अर्जुन के नाम	१४३, १४४	कन्धे के नाम	१००
अवस्था के नाम	१२४	कपूर के नाम	११८
अष्टापद के नाम	६०	कमर के नाम	१०३
आकाश के नाम	५३	कमर के आगे-पीछे के नाम	१०३
आज्ञा के नाम	१५५	कमल के नाम	१६, २०
आदिनाथ के नाम	११५	कमलिनी के नाम	२३
आमन्त्रण के नाम	१५८	करधौनी के नाम	१२०
आवाजों के नाम	१०५, १०६, १०७	कर्ण के नाम	६८
आश्चर्य के नाम	१७३	कलंक के नाम	१५३, १५४
आसन के नाम	११३	कल्याण के नाम	२००
इन्द्र के नाम	१३०	कस्तूरी के नाम	११८
इन्द्रिय के नाम	१३६	कष्ट के नाम	१८६
उत्प्रेक्षा के नाम	१३६	काम के नाम	७७, ८०, ८१, ८३, ८४
उत्साह के नाम	१७४	काम के धनुष के नाम	८३
उपमा के नाम	१३७	कार्तिकेय के नाम	६६, १२७
उपमान के नाम	१३७, १३८	काल के नाम	१४५, १४६

Scanned by CamScanner

नाम	श्लोक	नाम	श्लोक
काले रंग के नाम	१४८	गोपुर के नाम	१३५
किरण के नाम	४५, ४६	गोल के नाम	१८५
कीचड़ के नाम	२०	ग्रन्थकार का लघुताप्रकाशन	२०१
कीर्ति के नाम	१५४, १५५	घमण्डी के नाम	१६९, १७०
कुत्ते के नाम	९२	घुटने के नाम	१०३
कुल के नाम	१२५	घृत के नाम	१२३
कुबेर के नाम	९५, ९६	घोड़े के नाम	५२
कूख के नाम	१०२	घोर के नाम	१८६
कृष्ण के नाम	७४, ७५	चकवे के नाम	५१
केशर के नाम	११८	चतुर के नाम	१६६
कोट के नाम	१३५	चन्द्रमा के नाम	४६, ४७, ४८
कोमल के नाम	१५७		१२८, १८१
कंजूस के नाम	१७६	चाँदी के नाम	९४
क्रोध के नाम	१०९	चोटी के नाम	१९९
खाई के नाम	१३४	चोर के नाम	१७०
खूटी के नाम	१३५	छल के नाम	१३८, १९१
खून के नाम	१९१	छज्जे के नाम	१२५
गंगा के नाम	७१, १६४	छत्र के नाम	१९८
गड्ढे के नाम	१९३	छत्ते के नाम	१९८
गरुड़ के नाम	१२९, १३०	छाँछ के नाम	१२३
गले के नाम	१०१	छात्र के नाम	१०२
गहने के नाम	११९	छिद्र के नाम	४
गायों के घेरे का नाम	१६५	जल के नाम	१५
गुप्तचर के नाम	१८१	जवानी के नाम	१२४
गुप्त बात के नाम	१७५	जबर्दस्ती के नाम	१८३

Scanned by CamScanner

नाम	श्लोक	नाम	श्लोक
जानी हुई वस्तु के नाम	१०८	धान के नाम	१६४
जाँघ के नाम	१०३	धूर्त के नाम	१६८
जिनेन्द्रदेव के नाम	११४, १३२	धूलि के नाम	१५६
जुवारी के नाम	१२२	धैर्य के नाम	१७५
झरोझे के नाम	१३६	ध्वजा के नाम	८४
टुकड़े के नाम	१६०	नक्षत्र के नाम	४८
तट के नाम	२६, २७	नगरी के नाम	६७
तत्काल के नाम	१५६	नदी के नाम	२४
तलवार के नाम	८५	ननद के नाम	४३
तेज के नाम	४६, १८६	नरक के नाम	१६३
तेंदुए के नाम	६०	नवीन के नाम	१५७
दया के नाम	११०	नाम के नाम	१६७
दिक्पाल के नाम	६१	नारद के नाम	७३
दिग्गज के नाम	६१	नासिका के नाम	१०२
दिगम्बर के नाम	६१,११७	निन्दा के नाम	१६१
दिन के नाम	५०	निषेध के नाम	१५६
दिशा के नाम	६१	नीच के नाम	१६६
दुःख के नाम	१८६	नीचे के नाम	१६०
दुर्बल के नाम	१७५	नील रंग के नाम	१५१
दूध के नाम	१२३	नेत्र के नाम	६६
देर के नाम	१८६	नौकर के नाम	२६
देव के नाम	५६	पक्षी के नाम	५४
देश के नाम	६७	पण्डित के नाम	१११
धन के नाम	६५	पति के नाम	३७
धनुष के नाम	७६	पतिव्रता स्त्री के नाम	३४
धनुष की डोरी के नाम	८२	पत्थर के नाम	१७१

Scanned by CamScanner

नाम	श्लोक	नाम	श्लोक
पराग के नाम	१५२, १५३	बालक के नाम	४०
पर्वत के नाम	७, ८, ९	बात के नाम	१५६
पशु के नाम	१६	बाहु के नाम	१००
पाप के नाम	१३१, १३२	बुड्ढे के नाम	१२४
पाशबद्ध के नाम	१७७, १७८	बुद्धि के नाम	११०
पिता के नाम	३८	बंधान के नाम	१३४
पीतरंग के नाम	१५१	ब्रह्मा के नाम	७२, १२६
पुण्य के नाम	१३१	भाई के नाम	४२, ४३
पुत्र के नाम	३९	भीम के नाम	६३
पुत्री के नाम	४०	भील नाम	१३, १४
पुराने के नाम	१७५, १५८	भेड़िया के नाम	१२७
पुष्प के नाम	८०	भैंस के नाम	१६२
पृथ्वी के नाम	५, ६	भँवर के नाम	२७
पेट के नाम	१०२	भ्रमर के नाम	८२
पैर के नाम	१०३	मकान के नाम	१३२, १३४
प्यारी स्त्री के नाम	३३	मछली के नाम	१६, १७
प्रतापी के नाम	१९६	मदिरा के नाम	१११
प्रातःकाल के नाम	१८२	मद्यपी के नाम	१२२
प्रेरित वस्तु के नाम	१०४	मन के नाम	८१
बजने वाले बांस के नाम	१८४	मनुष्य के नाम	२८
बराबर के नाम	१३६, १३७	महल के नाम	१३५
बलभद्र के नाल	१४३	महादेव के नाम	६८, ७१
बहिन के नाम	४३	महावत के नाम	८९
बहुत के नाम	१७२, १९४	महावीर के नाम	११६
बहुत काल के नाम	१८२	माता के नाम	३८
बाण के नाम	७८	मामी के नाम	४३

Scanned by CamScanner

नाम	श्लोक	नाम	श्लोक
मार्ग के नाम	१६३	लड़ाई के नाम	१६१
माला के नाम	११६	लता के नाम	६२
मांस के नाम	५५	लम्बे के नाम	१८५
मित्र के नाम	४१	लहर के नाम	२७
मित्रता के नाम	१८७	लालरंग के नाम	१५०
मुख के नाम	६८	लेप के नाम	११६
मुनि के नाम	३, ६१, ११७	लोहे के नाम	१७२
मूर्ख के नाम	१६८	बख्तर के नाम	१६८
मृतप्राणी के नाम	१०८	बछड़े के नाम	१६५
मेघ के नाम	१६, १८	बज्र के नाम	१६
मोचा के अर्थ	१८२	वन के नाम	१३
मोटे के नाम	१८५	बन्दर के नाम	१२
मोती के नाम	६४	वर के नाम	१६२
मोर के नाम	१२६, १२७	बर्फ के नाम	१८०, १८१
युगल के नाम	२	वस्त्र के नाम	११७
युद्ध के नाम	८७	वाणी के नाम	१०४
युधिष्ठिर के नाम	१४७, १४८	बालों के नाम	१६६
युवा पुरुष के नाम	१२४	वायु के नाम	६२, ६३
योग्य के नाम	१८८	बारम्बार के नाम	१८८
रत्नत्रय के नाम	२०३	बिजली के नाम	१८, १६
राक्षस के नाम	५५	बिछुओं के नाम	१०७
राग के नाम	१६२	विद्याधर के नाम	५४
राजा के नाम	७, १०, २८, ११२	विवाह के नाम	१६२
रात्रि के नाम	४८	विवाहिता स्त्री के नाम	३२
लक्ष्मी के नाम	७६	वृक्ष के नाम	७, ११

Scanned by CamScanner

नाम	श्लोक	नाम	श्लोक
वेश्या के नाम	३६	सींग वाले पशु के नाम	१६४
व्यभिचारिणी स्त्री के नाम	३५	सुगन्ध के नाम	१७८, १८६
शब्द के नाम	१८७, १८८	सुवर्ण के नाम	९३, १०२
शय्या के नाम	१६७	सूर्य के नाम	४८, ४९, ५२
शत्रु के नाम	४४	सेना के नाम	८६
शरीर के नाम	१८, १९	सौभाग्यवती स्त्री के नाम	३२
शास्त्र के नाम	४	संशय के नाम	१५८
शिव के नाम	१०४	संसार के नाम	११३, १६५
शीत के नाम	१७६, १७७	स्तन के नाम	१०२
शूकर के नाम	९१	स्त्री के नाम	३०, ३१
शूरवीर के नाम	१९६	स्पष्ट के नाम	१७२
श्लोकों का परिणाम	२०४	स्वभाव के नाम	१८८
सखी के नाम	४१	स्वर्ग के नाम	५६
सत्य के नाम	१८४	स्वीकृत के नाम	१६०
सफेद के नाम	१, ९, १५०	हथियार के नाम	८३
सभासद के नाम	११२	हनुमान के नाम	६३
समीप के नाम	१४१, १४२	हमेशा के नाम	१६१, १६२
समुद्र के नाम	१६, २५	हरिण के नाम	१२८
समूह के नाम	१३९, १४०	हरे रंग के नाम	१५१
सम्पूर्ण के नाम	१९०	हर्ष के नाम	१०६
सर्प के नाम	१२८, १२९	हल के नाम	१४२
सहायक के नाम	४२	हस्त के नाम	१००
साहस के नाम	१६२	हस्ती के नाम	८८, ८९
साथ के नाम	१६०	हंस के नाम	१२६
सिंह के नाम	९०	हंसिनी के नाम	१२७

Scanned by CamScanner

ॐ

श्री परमात्मने नमः

श्री महाकवि धनञ्जय विरचिता

☼ नाम–माला ☼

(आदर्श-टीका-सहित)

मंगलाचरण

तन्नमामि परंज्योति–रवाङ्मानस–गोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्यां यद्, विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥१॥

अन्वयार्थ— [अहम्=मैं] तत्=उस, परंज्योतिः=उत्कृष्ट ज्योतिस्वरूप केवलज्ञान को, नमामि=नमस्कार करता हूँ। यत्=जो, अवाङ्मनसगोचरम्=वचन और मन के अगोचर [अस्ति=है, अविद्याम्=अज्ञान को, उन्मूलयति=नष्ट करता है, [च=और], विद्याम्=ज्ञान को, उन्मीलयति=प्रकाशित करता है।

भावार्थ— मैं धनञ्जय कवि उस उत्कृष्ट ज्योति-स्वरूप 'केवल ज्ञान को'*नमस्कार करता हूँ जो यद्यपि अज्ञान को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करता है, तो भी वचन और मन से नहीं जाना जाता।

देवागमगुरून्नत्वा, कोशस्यादर्शसञ्ज्ञिकाम् ।
प्रकृतां टिप्पनीं टीकां, कुर्वे मोहनशास्त्र्यहम् ॥

*'यो हि यद्गुणलब्ध्यर्थी स तं वन्द्यमानो दृष्टः' इस नियम के अनुसार यहाँ पर ज्ञान की चाह से सर्वाधिक; पूर्ण और अनन्त 'केवल-ज्ञान को नमस्कार किया गया है। मनसशब्द अकारांत भी है।

Scanned by CamScanner

युगल (जोड़े) के नाम

द्वयं द्वितय-मुभयं, यमलं युगलं युगम् ।
युग्मं द्वन्द्वं यमं द्वैतं, पादयोः पातु जैनयोः ॥२॥

द्वय, द्वितय, उभय, यमल, युगल, यग, युग्म, द्वन्द्व यम और द्वैत (न०) ये १० युगल (जोड़) के नाम हैं। श्री जिनेन्द्रदेव के चरणों का *युगल (जोड़ा) सबकी रक्षा करे।

मुनि के नाम

ऋषि र्यति र्मुनि र्भिक्षु-स्तापसः संयतो व्रती ।
तपस्वी संयमी योगी, वर्णी साधुश्च पातु वः ॥३॥

ऋषि, यति, मुनि, भिक्षु, तापस, संयत, व्रतिन्, तपस्विन्, संयमिन्, योगिन्, वर्णिन् और साधु (पु०) ये १२ मुनि के नाम हैं। वे +मुनि तुम्हारी और हमारी रक्षा करें।

शास्त्र और शिष्य के नाम

कृतान्ताऽऽगम-सिद्धान्ताः, ग्रन्थः शास्त्रमतः परम् ।
दीक्षितं मौण्ड्यं शिष्यं च, तमन्तेवासिनं विदुः ॥४॥

कृतान्त, आगम, सिद्धान्त, ग्रन्थ (पु०) और शास्त्र (न०) ये ५ शास्त्र के नाम हैं। दीक्षित, मौण्ड्यं, *शिष्य और अन्तेवासिन्

नोट:—पद्य नं० २ और ३ के चतुर्थ चरण से क्रमशः अर्हद्भगवान् और दिगम्बर मुनि को नमस्कार द्योतित होता है।

*किन्हीं दो चीजों के जोड़ को युगल कहते हैं।

+मुनि के नाम पद्य नं. ६१ और ११७ में भी आये हैं। पद्य नं. ३ में 'न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य' इस पाणिनीय व्याकरण के नियम से व्रती आदि पदों में नकार लुप्त हो गया है।

Scanned by CamScanner

(पु. ये ४ छात्र के नाम हैं। छात्र के नामों के अन्त में स्त्रीबोधक प्रत्यय जोड़ देने से छात्रा के नाम बन जाते हैं। जैसे–शिष्या दीक्षिता मौण्डघा और अन्तेवासिनी (स्त्री) आदि।

पृथ्वी (जमीन) के नाम

भूमि भूः पृथिवी पृथ्वी, गह्वरी मेदिनी मही ।
धरा वसुमती धात्री, क्षमा विश्व–म्भराऽवनिः ॥५॥
वसुधा धरणी क्षोणी, क्षमा धरित्री क्षितिश्च कुः ।
कुम्भिनीलोर्वरा चोर्वी, जगती गौ र्वसुन्धरा ॥६॥

भूमि, भू, पृथिवी, पृथ्वी, गह्वरी, मेदिनी मही, धरा, वसुमती, धात्री, क्षमा, विश्वम्भरा, अवनि, वसुधा, *धरणी, क्षोणी, क्षमा, धरित्री, क्षिति, कु, कुम्भिनी, इला, उर्वरा, उर्वी, जगती, गो और वसुन्धरा (स्त्री.) ये २७ पृथ्वी (जमीन) के नाम हैं।

पर्वत, राजा और वृक्ष के नाम

तत्पर्याय–धरः शैलः, तत्पर्याय–पति र्नृपः ।
तत्पर्याय–रुहो वृक्षः, शब्दमन्यञ्च योजयेत् ॥७॥

पृथ्वी के नामों के अन्त में 'धर' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं। जैसे–भूमिधर और भूधर (पु) आदि। 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे–भूमिपति और भूपति (पु.) आदि।

नोटः—'अतः परम्' का अर्थ 'मंगलाचरण के बाद' है। 'विदुः' क्रियापद के कारण दीक्षित आदि शब्द द्वितीयान्त हो गये हैं, नपुंसकलिंग नहीं हैं। *अवनी, धरणि, क्षोणि और ऊर्वि ये पाठान्तर भी हो सकते हैं। क्योंकि इनसे वैकल्पिक ङीष्प्रत्यय होता है।

Scanned by CamScanner

तथा 'रुह' शब्द जोड़ देने से वृक्ष के नाम बन जाते हैं। जैसे भूमिरुह, क्षितिरुह, कुरुह और भूरुह (पु०) आदि।

"शब्दमन्यं च योजयेत्" अर्थात् पृथ्वी के नामों के अन्त में अन्य शब्द जोड़कर और भी नाम बनाये जा सकते हैं। जैसे—भृत् शब्द जोड देने से पर्वत और राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे—भूमिभृत् और भूभृत् (पु०) आदि। ध्र शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं। जैसे—भूमिध्र क्षिर भूध्र (पु०) आदि।

स्वामिवाचक तथा पाल शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे भूस्वामी और भूपाल (पु०) आदि। इसी प्रकार अन्य शब्द जोड़कर और भी शब्द बनाये जा सकते हैं। जैसे—चर शब्द जोड़कर भूचर (पु०) आदि भूमिगोचरी मनुष्य के नाम बनाये जा सकते हैं। और देव शब्द जोड़कर भूदेव (पु०) इत्यादि ब्राह्मण के नाम बनाये जा सकते हैं।

पर्वत के (दूसरे) नाम

दरीभृदचलः शृङ्गी, पर्वतः सानुमान्गिरिः।
नगःशिलोच्चयोऽद्रिश्च, शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥८॥

दरीभृत्, अचल, शृंगिन्, पर्वत, सानुमत्, गिरि, नग, शिलोच्चय, अद्रि, शिखरिन्, त्रिककुत् और मरुत् (पु०) ये १२ पर्वत (पहाड़) के नाम हैं।

पर्वत के (तीसरे) नाम

प्रस्थं पार्श्वं तटं सानु, मेखलोपत्यका तटी।
नितम्बमन्तो दन्तश्च, तद्वानपि गिरिः स्मृतः ॥९॥

Scanned by CamScanner

प्रस्थ (पु० न०)—पर्वत की चोटी या समभूमि, पार्श्व (पु० न०)—पर्वत का पिछला भाग, तट (त्रि०)—पर्वत का किनारा, सानु (पु० न०)—पर्वत का शिखर या चोटी, मेखला (स्त्री०)—पर्वत का मध्यभाग, उपत्यका (स्त्री०) पर्वत के पास की जमीन, तटी (स्त्री०)— पर्वत का किनारा, नितम्ब (पु०न०)—पर्वत का मध्य-भाग, अन्त (पु०)—पर्वत का समीप और दन्त (पु०)—निकुञ्ज (लतागृह या अधनिकली चट्टान) का नाम है।

इन सबके अन्त में सम्बन्ध और आधार वाचक मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं। जैसे * प्रस्थवत् आदि।

राजा के नाम ×

राजाऽधिपः पतिः स्वामी, नाथः परिवृढः प्रभुः।
ईश्वरो विभुरीशानो, भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥१०॥

राजन्, अधिप, पति, स्वामिन्, नाथ, परिवृढ, प्रभु, ईश्वर, विभु, ईशान, भर्तृ, इन्द्र, इन और ईशितृ (पु०) ये १४ राजा के नाम हैं।

वृक्ष के नाम

अनोकहस्तरुः शाखी, विटपी फलिनो नगः।
द्रुमोऽङ्घ्रिपः÷फलेग्राही, पादपोऽगो वनस्पतिः ॥११॥

---

* "मादुपधायाश्च०" इत्यादि पाणिनीय सूत्र से अकारान्त शब्दों के अन्त में स्थित मतुप् प्रत्यय के म् को व् हो जाता है।

× राजाके नाम पद्य नं. ७, ८८ और ११२ में भी आयेहैं।

+ वृक्ष के नाम ७ वें पद्य में भी आये हैं।

÷ 'स्युरवन्ध्यः फलेग्राही, फलवान् फलिनः फली'। तथा 'दधित्थग्राहिमन्मथाः' अमरकोश के इन आधारों से 'फलो ग्राही' पाठान्तर भी सम्भव है। जिसका फलिन् और ग्राहिम् अर्थ होगा।

अनोकह, तरु, शाखिन्, विटपिन्, फलिन, नग, द्रुम, अङ्घ्रिप, फलेग्राहिन्, पादप, अग और वनस्पति (पु०) ये १२ वृक्ष (पेड़) के नाम हैं।

बन्दर के नाम

तत्पर्याय–चरो ज्ञेयो, हरि र्बलिमुखः कपिः
वानरः प्लवगश्चैव, गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥१२॥

वृक्ष के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से बन्दर के नाम बन जाते हैं। जैसे – अनोकहचर और तरुचर (पु०) इत्यादि। तथा हरि, बलिमुख, बलीमुख, कपि, वानर, प्लवग (प्लवंग), गोलाङ्गूल और मर्कट (पु०) ये बन्दर के नाम हैं।

वन (जंगल) और भील के नाम

विपिनं गहनं कक्ष–मरण्यं काननं वनम् ।
कान्तारमटवी दुर्गं, तच्चरः स्याद्वनेचरः ॥१३॥

विपिन, गहन, कक्ष, अरण्य, कानन, वन, कान्तार (न०), अटवी (स्त्री०) और दुर्ग (न०) ये ६ वन (जंगल) के नाम हैं। इनके अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से * वनेचर (भील) के नाम बन जाते हैं। जैसे—विपिनचर, गहनचर (पु०) आदि।

भील के नाम

पुलिन्दः शवरो दस्यु–र्निषादो व्याधलुब्धकौ ।
धानुष्कोऽथ किरातश्च, सोऽरण्यानीचरः स्मृतः ॥१४॥

पुलिन्द, शवर, दस्यु, निषाद, व्याध, लुब्धक, धानुष्क और किरात (पु०) ये अरण्यानीचर (पु०) अर्थात् भील के नाम हैं।

---

* 'हलन्दन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम्' इस पाणिनीय सूत्र से यहाँ सप्तमी विभक्ति का लोपाभाव हो गया है।

Scanned by CamScanner

+अरण्यानी (स्त्री०) बड़ी पहाड़ी (जंगल) का नाम है। उसमें रहने के कारण भील को अरण्यानीचर कहते हैं।

पानी (जल) के नाम

वा वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु, पाथोऽर्णः सलिलं जलम्।
सरं वनं कुशं नीरं, तोयं जीवनमप्विषम् ॥१५॥

वार्, वारि, क, पयस्, अम्मस्, अम्बु, पाथस्, अर्णस्, सलिल, जल, सर, वन, कुश, नीर, तोय, जीवन (न०), अप् (स्त्री० बहुवचन) और विष (न०) ये १८ जल (पानी) के नाम हैं।

मछली, मेघ, कमल और समुद्र के नाम

तत्पर्याय—चरो मत्स्यः, तत्पर्याय—प्रदो घनः।
तत्पर्यायोद्भवं पद्मं, * तत्पर्यायधरोऽम्बुधिः ॥१६॥

पानी के नामों के अन्त में चर शब्द जोड़ देने से मत्स्य अर्थात् मछली के नाम हो जाते हैं। जैसे—वाश्चर, पाथश्चर, अर्णश्चर और वारिचर (पु०) इत्यादि। प्रदशब्द जोड़ देने से मेघ के नाम बन जाते हैं। जैसे—वाः प्रद, वारिप्रद (पु०) आदि।

उद्भव शब्द जोड़ देने से कमल के नाम बन जाते हैं। जैसे—वारुद्भव और वार्युद्भव (न०) इत्यादि। तथा धरशब्द जोड़ देने से मेघ के नाम बन जाते हैं। जैसे—जलधर, वार्धर, पयोधर, अम्बु-धर, सलिलधर और अम्भोधर (पु०) इत्यादि।

+ 'महदरण्यम् अरण्यानी' अर्थात् बड़ा जंगल। शर पाठान्तर भी है। × 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' इस सूत्र से रु को उत्व हुआ है। S यह अकार (अ) का चिह्न है। * तत्पर्यायधिरम्बुधिः। ऐसा पाठान्तर भी है। अर्थात् जल के नामों के अन्त में धि शब्द जोड़ देने से अम्बुधि (समुद्र) के नाम बन जाते हैं।

Scanned by CamScanner

मछली के नाम

पृथुरोमा षडक्षीणो, यादो वैसारिणो झषः।
विसारी सफरो मीनः, पाठीनोऽनिमिषस्तिमिः ॥१७॥

पृथुरोमन्, षडक्षीण (पु०), यादस् (न०), वैसारिण, झष, विसारिन्, सफर, मीन, पाठीन, अनिमिष और तिमि (पु०) ये ११ मछली के नाम हैं। * 'विसार' यह पाठान्तर भी है।

मेघ, बिजली और वज्र के नाम

घनाघनो घनो मेघो, जीमूतोऽभ्रं बलाहकः।
पर्जन्योमुदिरोऽनभ्राट्,शम्पा × सौदामिनीतडित्॥१८॥
आकालिकी क्षणरुचिः, विद्युत् तत्पतिरम्बुदः।
निर्घातमशनिं वंज्र—मुल्काशब्दं च योजयेत् ॥१९॥

घनाघन, घन, मेघ, जीमूत (पु०), अभ्र (न०) +बलाहक, पर्जन्य, मुदिर और * अनभ्राज् (पु०) ये ९ मेघ के नाम हैं। शम्पा, सौदामिनी (सौदामनी), तडित्, आकालिकी, क्षणरुचि और विद्युत् (स्त्री०) ये ६ बिजली के नाम हैं।

निर्घात (न०), अशनि (स्त्री० पु०) और वज्र (पु० न०) ये ३ वज्र और गाज के नाम हैं। बिजली और वज्र के नामों तथा उल्का (रेखाकार तेज) शब्द के अन्त में पतिवाचक शब्द जोड़ देने से भी मेघ के नाम बन जाते हैं। जैसे—शम्पापति, निर्घातपति और उल्कापति (पु०) इत्यादि।

---

* 'विसारः शकुली चाथ, मीनो वैसारिणोऽण्डजः'। अमर० कोश वारिवर्ग पद्य १७। × 'तडित्सौदामनी विद्युत्' इत्यमरः।
+ वारीणां वाहकः इति विग्रहे 'अचतुर-विचतुर०' इत्यादिना सिद्धः।
* 'ब्रश्चभ्रस्जेति०' षस्य डः। 'वावसाने' इति डकारस्य टकारः।

कीचड़ और कमल के नाम

परिषत्कर्दमः पङ्क-स्तज्जं तामरसं विदुः ।
कमलं नलिनं पद्मं, सरोजं सरसीरुहम् ॥२०॥
खरदण्ड कोकनदं, पुण्डरीकं महोत्पलम् ।
इन्दीवरं चारविन्दं, शतपत्रं च पुष्करम् ॥२१॥
स्यादुत्पलं कुवलय-मथ नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्, सिते कुमुदकैरवे ॥२२॥

परिषत्, कर्दम और पंक (पु०) ये तीन कीचड़ के नाम हैं । इनके अन्त में ज वाचक शब्द जोड़ देने से तामरस (न०) अर्थात् कमल के नाम बन जाते हैं । जैसे-परिषज्ज, कर्दमज, पंकज आदि ।

कमल, नलिन (न०) पद्म (न० पु०), सरोज, सरसीरुह, खर-दण्ड, कोकनद, पुण्डरीक, महोत्पल, इन्दीवर, अरविन्द, शतपत्र, पुष्कर, उत्पल और कुवलय (न०) ये १५ सामान्य कमल के नाम हैं । नीलाम्बुजन्मन् और इन्दीवर (न०) ये २ नीलकमल के नाम हैं । तथा कुमुद और कैरव (न० ये २ श्वेत कमल के नाम हैं ।

लता और कमलिनी के नाम

तद्वती विसिनी ज्ञेया, व्रतती वल्लरी लता ।
वल्लीनामानि योज्यानि, वारिधिर्वर्ण्यतेऽधुना॥२३॥

कमल के नामों के अन्त में स्त्रीप्रत्ययान्त मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से विसिनी (स्त्री०) अर्थात् कमलिनी के नाम बन जाते हैं । जैसे-कमलवती (स्त्री०) इत्यादि व्रतती, वल्लरी, लता, वल्ली (स्त्री०) ये ४ लता के नाम हैं । कमल के नामों के अन्त में लता के नामों को

---

*यह पद्य अमरकविकृत अमरकोष में भी सर्वथा इसी प्रकार है ।

Scanned by CamScanner

जोड़ देने से भी कमलिनी के नाम बन जाते हैं। जैसे-कमल-व्रततो, पद्मवल्ली और सरोजलता (स्त्री०) इत्यादि। अब वारिधि (जलाशय) के नाम कहे जाते हैं।

नदी के नाम

स्रोतस्विनी धुनी सिन्धुः, स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा।
नदी नदो द्विरेफश्च, सरिन्नाव्या तरंगिणी ।।२४।।

* स्रोतस्विनी, धुनी, सिन्धु, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, नदी (स्त्री०), नद, × द्विरेफ (पु०), सरित्, ÷नाव्या और तरंगिणी (स्त्री०) ये १२ नदी के नाम हैं। यहां मूलपाठ 'सरिन्नामा' है परन्तु संशोधित पाठ ही उपयुक्त है।

समुद्र के नाम

तत्पतिश्च भवत्यब्धिः, पारावारोऽमृतोद्भवः।
अपारवारकूपारो, रत्न-मीनाऽभिधा-करः ।।२५।।
समुद्रो वारिराशिश्च, सरस्वान्सागरोऽर्णवः ।

नदी के नामों के अन्त में 'पति-वाचक' शब्द जोड़ देने से अब्धि अर्थात् समुद्र के नाम बन जाते हैं। जैसे-सरित्पति (पु०) आदि। तथा अब्धि, पारावार, अमृतोद्भव, +अपारवार, अकूपार,

---

* स्रोतस्वती पाठान्तर भी है 'अस्मायामेधास्रजो विनिः' इति विनिप्रत्ययः। तदुक्तम् 'स्रोतस्वती द्वीपवती, स्रवन्ती निम्नगापगा'। अमरकोश वारिवर्ग पद्य ३०। × निझँरिणी त्रिस्रोता आदि। +नावा तार्या नाव्या। तदुक्तम्-"नाव्या सुप्रतरा नदी ÷ रघुवंश सर्ग ४ पद्य ३१। अपार वार् यह शब्द रेफान्त है। अपार=अधिक, वार्=जल है जिसमें। अपारं वारः यस्मिन् तत् अपारवाः।

Scanned by CamScanner

* रत्नाकर, मीनाकर, समुद्र, वारिराशि, सरस्वत्, सागर और अर्णव (पु०) ये १२ समुद्र × के नाम हैं।

तट, भँवर और लहर के नाम

सीमोपकण्ठं तीरं च, पारं रोधोऽवधिस्तटम् ॥२६॥
पाली वेला तटोच्छ्वासो, विभ्रमोऽयमुदन्वतः।
भंगस्तरंगकल्लोलौ, वीचिरुत्कलि—कावलिः ॥२७॥

सीमा, सीमन् (स्त्री०), उपकण्ठ, तीर, पार, रोधस् (न०), अवधि (पु०), तट (त्रि०), पाली और वेला (स्त्री०) ये १० तीर के नाम हैं। तटोच्छ्वास (पु०) यह समुद्र की विभ्रम (भँवर-भौंर) का नाम हैं भंग, तरंग, कल्लोल (पु०) वीचि (पु० स्त्री०), उत्कलिका और आवलि (स्त्री०) ये ६ जल की लहर के नाम हैं।

मनुष्य और राजा के नाम

मनुष्यो मानुषो मर्त्यो, मनुजो मानवो नरः।
ना पुमान् पुरुषो गोधा, धवः स्यात्तत्पतिर्नृपः ॥२८॥

मनुष्य मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, नृ, पुम्स्, पुरुष (पु०) और गोधा (स्त्री०) ये ११ मनुष्य के नाम हैं। इनके अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे—मनुष्यपति नृपति (पु०) आदि।

---

*रत्न और मछली के नामों के अन्त में खनिवाचक आकर आदि शब्द जोड़ देने से भी समुद्र के नाम बन जाते हैं। जैसे—रत्नाकर और मीनाकर आदि। × पानी के नामों के अन्त में पतिवाचक शब्द जोड़ देने से भी समुद्र के नाम बन जाते हैं। जैसे - पाथसम्पति, जलपति, अपाम्पति और वारिपति इत्यादि।

Scanned by CamScanner

नौकर के नाम

भृत्योऽथ भूतकः पत्तिः, पदातिः पदगोऽनुगः ।
भटोऽनुजीव्यनुचरः, शस्त्रजीवी च किंकरः ॥२९॥

भृत्य, भूतक, पत्ति, पदाति, पदग, अनुग, भट, अनुजीविन्, अनुचर, शस्त्रजीविन् और किंकर (पु०) ये ११ नौकर के नाम हैं।*

स्त्री के नाम

स्त्री नारी वनिता मुग्धा, भामिनी भीरुरंगना ।
ललना कामिनी योषिद्, योषा सीमन्तिनी वधूः॥३०॥
नितम्बिन्यबला बाला, कामुकी वामलोचना ।
भामा तनूदरी रामा, सुन्दरी युवतिश्चला ॥३१॥

स्त्री, नारी, वनिता, मुग्धा, भामिनी, भीरु, अंगना ललना, कामिनी, योषित्, योषा, सीमन्तिनी, वधू, नितम्बिनी, अबला, बाला, कामुकी, वामलोचना, भामा, तनूदरी, रामा, सुन्दरी, युवति और चला (स्त्री) ये २४ सामान्य स्त्री के नाम हैं।

विवाहिता और सौभाग्यवती स्त्री के नाम

भार्या जाया जनिः कुल्या, कलत्रं गेहिनी गृहम् ।
महिला मानिनी पत्नी तथा×दाराःपुरन्ध्रिका॥३२॥

---

*स्त्रीवाचक प्रत्यय जोड़ देने से ये शब्द स्त्रीलिंग भी हो जाते हैं। जैसे—भृत्या और अनुजीविनी इत्यादि। ×'पुंसि भूम्नि च दाराः स्यात्' इस अमरकोशीय प्रमाण के अनुसार पुल्लिग दारा शब्द केवल बहुवचन में चलता है। जैसे—दाराः, दारान्, दारैः, दारेभ्यः, दाराणाम्, दारेषु, हे दाराः।

Scanned by CamScanner

भार्या, जाया, जनि, जनी, कुल्या (स्त्री०), कलत्र (न०), गेहिनी (स्त्री०), गृह (न०), महिला, मानिनी, पत्नी (स्त्री०) और दारा (पु०) ये १० विवाहिता स्त्री के नाम हैं। * पुरन्ध्रिका, पुरन्ध्रि और पुरन्ध्री (स्त्री०) ये ३ पुत्र और पति वाली (सौभाग्यवती) स्त्री के नाम हैं।

प्यारी स्त्री के नाम

वल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा, रमणी दयिता प्रिया।
इष्टा च प्रमदा कान्ता, चण्डी, प्रणयिनी तथा॥३३॥

वल्लभा, प्रेयसी, प्रेष्ठा, रमणी, दयिता, प्रिया, इष्टा, प्रमदा, कान्ता, चण्डी, प्रणयिनी (स्त्री०) ये ११ प्यारी स्त्री के नाम हैं।

पतिव्रता स्त्री के नाम

सती पतिव्रता साध्वी, पतिवत्न्येकपत्न्यपि।
मनस्विनी भवत्यार्या, विपरीता निरूप्यते॥३४॥

सती, पतिव्रता, साध्वी, पतिवत्नी, एकपत्नी, मनस्विनी और आर्या (स्त्री०) ये सात पतिव्रता अर्थात् सदाचारिणी स्त्री के नाम हैं। अब आगे के पद्य में इससे विपरीत व्यभिचारिणी स्त्री के नाम कहते हैं।

व्यभिचारिणी और दूती के नाम

बन्धकी कुलटा मुक्ता, पुनर्भूः पुंश्चली खला।
स्पर्शाऽभिसारिका दूती, स्वैरिणी संफली तथा॥३५॥

बन्धकी, कुलटा, मुक्ता, पुनर्भू, पुंश्चली और खला (स्त्री०) ये ६ व्यभिचारिणी स्त्री के नाम हैं। स्पर्शा, + अभिसारिका, दूती, स्वैरिणी और सम्फली (स्त्री०) ये ५ दूती के नाम हैं।

---

*'स्वार्थे कः' इति सूत्रेणात्र कः प्रत्ययः। +'प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः इत्यादिना सूत्रेण इत्वं च।

Scanned by CamScanner

वेश्या के नाम

गणिका लज्जिका वेश्या, रूपाजीवा विलासिनी।
पण्यस्त्री दारिका दासी, कामुकी सर्ववल्लभा ॥३६॥

गणिका, लज्जिका, वेश्या, रूपाजीवा, विलासिनी, पण्यस्त्री, दारिका, दासी, कामुकी और सर्ववल्लभा (स्त्री०) ये १० वेश्या के नाम हैं। दासी पाठान्तर भी हैं।

पति के नाम

कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः, प्रियः कामी च कामुकः।
वल्लभोऽसुपतिः प्रेयान्,* विटश्च रमणो वरः॥३७॥

कान्त, इष्ट, दयित, प्रीत, प्रिय, कामिन्, कामुक, वल्लभ, असुपति प्रेयस्, विट, रमण और वर (पु०) ये १३ पति के नाम हैं।

माता और पिता के नाम

सवित्री जननी माता, सविता जनकः पिता।

सवित्री, जननी और मातृ (स्त्री०) ये ३ माता के नाम हैं। सवितृ, जनक और पितृ (पु०) ये ३ पिता के नाम हैं।

शरीर, पुत्र, बालक और पुत्री के नाम

देहोऽपधनकायांगं, वपुः संहननं तनुः ॥३८॥
कलेवरं शरीरं च, मूर्तिरस्माद्भवः सुतः।
त्रः सूनुरपत्यं च, तुक् तोकं चात्मजः प्रजा ॥३९॥
उद्वहस्तनयः पोतो, दारको नन्दनोऽर्भकः।
स्तनन्धयोत्तानशयौ स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः ॥४०॥

---

*'विटश्च' के स्थान में 'वरश्च' पाठ सुन्दर प्रतीत होता है। विट तो उपपत्ति अर्थात् यार का भी नाम है। 'विधवा-सधवा' आदि शब्दों में धवशब्द पति अर्थ में प्रयुक्त भी होता है।

Scanned by CamScanner

देह (पु०न०), अपघन (पु०) काय (पु०न०), अंग, वपुस्, संहनन (न०), तनु, तनू (स्त्री०), कलेवर, शरीर (न० और मूर्ति (स्त्री०) ये ११ शरीर के नाम हैं । इनके अन्त में भव भू या जवाचक शब्द जोड़ देने से पुत्र के नाम हो जाते हैं । जैसे-देहभवं, आत्मभू, तनुज (पु०) आदि । मूर्तिरस्माद्भुवः सुताः यह पाठान्तर भी है ।

सुत, पुत्र, सूनु (पु०), अपत्य (न०) तुक् (पु०), तोक (न०) आत्मज (पु०), प्रजा (स्त्री०) ये पुत्र के नाम हैं । उद्वह, तनय, पोत, दारक, नन्दन, अर्भक, * स्तनन्धय और उत्तानशय (पु०) ये बालक के नाम हैं ।

इनके अन्त में स्त्रीलिंगबोधक प्रत्यय जोड़ देने से दुहितृ (स्त्री०) अर्थात् पुत्री के नाम बन जाते हैं । जैसे- सुता, पुत्री और दारिका (स्त्री०) आदि । परन्तु अपत्य और तोक शब्द नपुंसकलिंग में रहते हुए ही पुत्र व पुत्री दोनों के वाचक हैं ।

सखी और मित्र के नाम

वयस्याऽऽली सहचरी, सध्रीची सवयाः सखी ।
आलीयिवर्जितं मित्रं, सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ॥४१॥

वयस्या, आली, *आलि, सहचरी, सध्रीची, सवयस् और सखी (स्त्री०) ये ७ सखी के नाम हैं । इनमें से आली शब्द को छोड़ कर शेष शब्द स्त्रीबोधक प्रत्यय निकाल देने से मित्र के नाम बन जाते हैं । जैसे-वयस्य, सहचर, सध्र्यच्, सवयस् और सखि (पु०)

---

*स्तनन्धय-दूध पीते बालक का और उत्तानशय-चित्त (ऊपर को मुख किये) सोने वाले बालक का नाम है ।

*'आलिः सखी वयस्याथ' इत्यमरः । ऐसी हालत में 'वयस्याली' यह पद द्विवचनान्त जानना चाहिये । वैकल्पिक ङीष्प्रत्यय से आलि और आली शब्द बनते हैं ।

(पु०) तथा मित्र)न०), सम्बन्ध, मित्रयुज् और सुहृत् (पु०) ये ६ मित्र के नाम हैं।

सहायक, भाई, बहिन, नन्द व भामी के नाम

सहकृत्वा सहकारी, सहायः सामवायिकः।
सनाभिः बन्धुसगोत्रौ, सोदर्योऽवरजोऽनुजः ।४२।
कनीयानग्रजो ज्येष्ठो, भ्रातृजानी स्वसाऽनुजा।
भर्तुःस्वसा ननान्दा स्यान्मातुलानीप्रियाम्बिका।४३।

सहकृत्वन्, सहकारिन्, सहाय और सामवायिक (पु०) ये ४ सहायक के नाम हैं। सनाभि, बन्धु, सगोत्र और सौदर्य (पु०) ये ४ सगे भाई के नाम हैं। अवरज, अनुज और कनीयस् (पु०) ये तीन छोटे भाई के नाम हैं। अग्रज और ज्येष्ठ (पु०) ये २ बड़े भाई के नाम हैं।

भ्रातृजानी और स्वसृ (स्त्री०) ये दो बहिन के नाम हैं। अनुजा (स्त्री०) यह छोटी बहिन का नाम हैं। ननान्दृ (स्त्री०) यह पति की बहिन (ननद) का नाम है। तथा मातुलानी * और प्रियाम्बिका (स्त्री०) ये २ मामी अर्थात् मामा की स्त्री के नाम हैं।

शत्रु के नाम

वैरंरातिरमित्रोरि-द्विट् सपत्नो द्विषद्रिपुः ।
असेव्यो दुर्जनः शत्रु-र्दुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ।४४।

वैरिन्, अराति, अमित्र अरि, द्विष्, सपत्न, द्विषत्, रिपु, असेव्य, दुर्जन, शत्रु, दुष्ट, द्वेषिन्, खल और अहित (पु०) ये १६ शत्रु के नाम हैं। *

---

* मातुलोपाध्याययोरानुक्वा, इस पाणिनीय वार्तिक के अनुसार 'मातुली वा' यह पाठान्तर भी हो सकता है। * स्त्रीवाचकप्रत्यय जोड़ देने से ये शब्द (स्त्रीलिंग) भी हो जाते हैं। जैसे वैरिणी आदि।

Scanned by CamScanner

किरण और तेज के नाम

दीधिति र्भानुरुस्रोंऽशु-र्गभस्तिः किरणः करः।
पादो रुचि र्मरीचि र्भास्तेजोऽर्चि र्गोर्द्युतिः प्रभा ।४५।
दीप्ति र्ज्योति र्महो धाम, रश्मिरूर्जो विभावसुः।
शीतोष्ण * प्रायपूर्वाङ्कची, तद्वन्ताविन्दु-भास्करौ ।४६।

दीधिति (स्त्री०), भानु, उस्र अंशु, ×गभस्ति, किरण, कर, पाद (पु०), रुचि (स्त्री०), मरीचि (पु० स्त्री०), भास् (स्त्री०), तेजस्, अर्चिष् (न०), गो (स्त्री० पु०), द्युति और प्रभा (स्त्री०) ये १६ किरण के नाम हैं।

दीप्ति (स्त्री०), ज्योतिष्, ज्योति, महस्, धामन् (न०), रश्मि (पु०), उर्जस् (न०) और विभावसु (पु०) ये ८ तेज के नाम हैं।

किरण और तेज के नामों के आदि में 'शीत' शब्द और अन्त में मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से इन्दु अर्थात् चन्द्रमा के नाम तथा आदि में 'उष्ण' शब्द और अन्त में मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से सूर्य के नाम बन जाते हैं। जैसे—शीतदीधितिमत्, शीतकिरणवत् तथा उष्ण-दीधितिमत् और उष्णकिरणवत् (पु०) आदि।

---

* सूर्य और चन्द्र के नाम बनाने के लिये किरण के नामों के अन्त में मतुबर्थक प्रत्यय जितने आवश्यक हैं, उतने शीत और उष्ण शब्द आवश्यक नहीं हैं। इनके सहयोग के बिना भी भानुमान् आदि प्रयोग होते हैं। इसलिये प्रायः शब्द की उक्ति चरितार्थ होती है।

×वर्णागमो गवेन्द्रादौ, सिंहे वर्णविपर्ययः।
षोडशादौ विकारस्तु, वर्णनाशः पृषोदरे ॥

Scanned by CamScanner

चन्द्रमा के नाम

शशी विधुः सुधासूतिः, ×कौमुदी कुमुदप्रियः।
कलाभृच्चन्द्रमाश्चन्द्रः, कान्तिमानोषधीश्वरः ।४७।

शशिन्, विधु, सुधासूति, कौमुदिन्, कुमुदप्रिय, कलाभृत्, चन्द्रमस्, चन्द्र, कान्तिमत् और ओषधीश्वर (पु. ये १० चन्द्रमा के नाम हैं। +ओषधीश्वर पाठान्तर भी हो सकता है।

नक्षत्र, चन्द्रमा और रात्रि के नाम

उडूनि भानि तारक्षं, नक्षत्रं तत्पति-निशा।
क्षणदा रजनी नक्तं, दोषा श्यामा क्षपाकरः ।४८।

उडु, भ (न.), तारा (स्त्री.), ऋक्ष और नक्षत्र (न.) ये ५ नक्षत्र के नाम हैं। इनके अन्त में 'पति-वाचक' शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे—उडुपति, तारापति आदि।

निशा, क्षणदा, रजनी (स्त्री.), नक्तं (अव्यय) दोषा, श्यामा और क्षपा (स्त्री.) ये ७ रात्रि के नाम हैं। इनके अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से भी चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे—निशाकर और क्षपाकर (पु.) आदि।

* सूर्य, दिन और चकवे के नाम

तरणिस्तपनो भानु-र्ब्रघ्नः पूषार्यमा रविः।
तिग्मः पतङ्गो द्यु मणि-र्मार्तण्डोऽर्को ग्रहाधिपः ।४९।

×'कौमुदी' के स्थान में कुमोदी, कुमोद और कौमोद (पु.) पाठान्तर हैं। +चन्द्रमा के नाम पद्य नं. ४६, ४८, १२८ और १८१ में भी आये हैं। पद्य १२८ में रात्रि का नाम शर्वरी भी है।

* सूर्य के नाम पद्य नं. ४६ में भी आये हैं।

Scanned by CamScanner

इनः सूर्यस्तमोध्वान्तः, तिमिराऽरि विरोचनः ।
दिनं दिवाह–दिवसो, वासरस्तत्करश्च सः ।५०।
चक्रवाकाऽब्जपर्याय-बन्धु कुमुदविप्रियः ।
यमुनायमकानीन–जनकः सविता मतः ।५१।

तरणि, तपन, भानु, अहन, पूषन्, अर्यमन्, रवि, तिग्म, पतंग, द्युमणि, मार्तण्ड, अर्क, ग्रहाधिप, इन, सूर्य, तमोरि, ध्वान्तारि, तिमिरारि * और विरोचन (पु.), ये १६ सूर्य के नाम हैं ।

दिन (न.), दिवा (अव्यय), अहन् (न.), दिवस और वासर (पु.) ये ५ दिन के नाम हैं । दिन के नामों के अन्त में 'कर' शब्द जोड देने से भी सूर्य के नाम हो जाते हैं । जैसे–दिनकर आदि ।

× कोक, चक्र, चक्रवाक और रथांग (पु.) ये ४ चकवे के नाम हैं । इन चकवे के नामों के अन्त में और पूर्वोक्त कमल के नामों के अन्त में 'बन्धुवाचक' शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम बन जाते हैं । जैसे कोकबन्धु और कमलबन्धु (पु.) आदि । तथा कुमुदविप्रिय, यमुनाजनक, यमजनक और कानीनजनक (पु.) ये भी सवितृ (पु.) अर्थात् सूर्य के नाम हैं ।

घोड़े के नाम

वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी, हयो धुर्यस्तुरङ्गमः ।
सप्तिरर्वा हरी रथ्यः, सप्ताद्यश्वो मयूखवान् ।५२।

---

* अन्धकार के नामों के अन्त में अरि-शत्रुवाचक शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम बन जाते हैं । जैसे— तिमिरारि, तमोरि और तमोद्विट् इत्यादि । ×'कोकश्चक्रश्चक्रवाको, रथांगाह्वयनामकः' इत्यमरः । +'हरी रथ्यः' पद में 'रो रि' इस सूत्र से रेफ का लोप होने पर 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इस पाणिनीय सूत्र से इकार दीर्घ हो गया है ।

Scanned by CamScanner

वाह, अश्व, तुरग, वाजिन्, हय, धुर्य, तुरंगम, सप्ति, अर्वन्, हरि और रथ्य (पु.) ये ११ घोड़े के नाम हैं। घोड़े के नामों के आदि में 'सप्त' शब्द जोड़ देने से मयूखवत् (पु.) अर्थात् सूर्य के नाम बन जाते हैं। जैसे—सप्तवाह, सप्तवाजिन्, सप्तसप्ति और सप्ताश्व (पु.) आदि।

आकाश के नाम

खं विहायो वियद् व्योम, नगनाकाश-मम्बरम्।
द्यौ र्नभोऽभ्रोऽन्तरिक्षं च, मेघवायु-पथोऽप्यथ ।५३।

ख (न.), + विहायस् (पु न.), वियत्, व्योमन्, गगन, आकाश' अम्बर (न.), द्यो, दिव् (स्त्री.), नभस्, अभ्र, अन्तरिक्ष, अन्तरीक्ष (न.)' * मेघपथ और वायुपथ (पु.) ये १५ आकाश के नाम हैं।

विद्याधर और पक्षी के नाम

तच्चरः खेचरस्तद्गः, पक्षी पत्री पतत्र्यपि।
शकुन्तिः शकुनि र्विश्च, पतङ्गो विष्किरो वयः।५४।

आकाश के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से विद्याधर के नाम बन जाते हैं। जैसे— ×खेचर और विहायश्चर (पु.) आदि। तथा 'ग' शब्द जोड़ देने से पक्षी और विद्याधर के नाम हो जाते हैं। जैसे खग, विहायोग, नभोग और वियद्ग

+ यह शब्द अकारान्त भी है। जैसे—विहायः, विहायौ, विहायाः इत्यादि। * मेघ और वायु के नामों के अन्त में पथ (मार्ग) वाचक शब्द जोड़ देने से आकाश के नाम बन जाते हैं। जैसे—मेघपथ और वायुपथ इत्यादि। × 'हलन्दन्तात्सप्तम्याः' इस पाणिनीय सूत्र से यहां सप्तमी का लोप नहीं हुआ।

Scanned by CamScanner

(पु.) आदि। तथा पक्षिन्, पत्रिन्, +पतत्रिन्, शकुन्ति, शकुनि, वि, पतंग, खिञ्किर (पु.) और वयस् (न.) ये ६ पक्षी के नाम हैं।

नोट— नभचर इत्यादि शब्दों के प्रयोग से ध्वनित होता है कि आकाश के नामों के अन्त में चरशब्द जोड़ देने से पक्षी के भी नाम बन जाते हैं।

मांस तथा राक्षस के नाम

जांगलं पिशितं मांसं, पलं पेशी च तत्प्रियः।
यातुधानस्तथा रक्षो, रात्र्यादिचर इष्यते ।५५।

जांगल, पिशित, मांस. पल (न.) और पेशी (स्त्री.) ये ५ मांस के नाम हैं। इनके अन्त में 'प्रिय' शब्द जोड़ देने से राक्षस के नाम बन जाते हैं। जैसे—मांसप्रिय (पु.) आदि। यातुधान पु.) और * रक्षस् (न.) ये भी राक्षस के नाम हैं। तथा रात्रि के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से भी राक्षस के नाम बन जाते हैं। जैसे—रात्रिचर और निशाचर (पु.) आदि।

देव और स्वर्ग के नाम

सुतोऽदितेस्तडिद्धन्वा, सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः।
स्वर्द्यौः स्वर्गोऽथ नाकश्च, तद्वासस्त्रिदशो यतः।५६।

अदिति शब्द के अन्त में पुत्रवाचक शब्द जोड़ देने से देव के नाम बन जाते हैं। जैसे— अदितिसुत और अदितिसूनु आदि तथा तडिद्धन्वन्, सेन्द्र, देव, सुर और अमर (पु.) ये ५ भी देव के

+ पतत्रि, शकुन्त, शकुन और पतंग ये पाठान्तर भी हो सकते हैं।

* 'रक्षः एव' इस प्रकार के विग्रह में 'स्वार्थेऽण्' इस सूत्र से स्वार्थ में 'अण् प्रत्यय' करने पर राक्षस (पु.) शब्द भी बनता है।

Scanned by CamScanner

नाम हैं। स्वर् (अव्यय), * दिव्, द्यो स्त्री.), स्वर्ग और नाक (पु.) ये ५ स्वर्ग के नाम हैं। इनके अन्त में 'वास' शब्द जोड़ देने से भी त्रिदश (पु.) अर्थात् देव के नाम बन जाते हैं। जैसे-स्ववर्वास, सुवास और द्योवास (पु.) इत्यादि।

इन्द्र के नाम

तत्पतिः शक्र इन्द्रश्च, सुनाशीरः शतक्रतुः।
प्राचीनबर्हीः सूत्रामा, वज्री चाखण्डलो हरिः।५७।
शत्रु र्बलस्य गोत्रस्य, पाकस्य नमुचे रपि।
वृत्रहा च सहस्राक्षो, गीर्वाणेशः पुरन्दरः।५८।
विडौजाश्चाप्सरोनाथो, वासवो हरिवाहनः।
मरुत्पति र्मरुत्वांश्च, वृषा चैरावणाधिपः।५९।
शतमन्यु स्तुराषाट् च, पुरुहूतश्च कौशिकः।
सङ्क्रन्दनोऽथ मघवान्, पुलोमारि र्मरुत्सखः।६०।

देव और स्वर्ग के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से इन्द्र के नाम बन जाते हैं। जैसे त्रिदशपति, देवपति, स्वर्गपति और नाकपति (पु.) आदि। तथा शक्र, इन्द्र, सुनाशीर, शतक्रतु. प्राचीनबर्हिष्, * सूत्रामान्, वज्रिन्, आखण्डल, हरि, बलशत्रु, गोत्रशत्रु, पाकशत्रु, नमुचिशत्रु, वृत्रहन्, सहस्राक्ष, गीर्वाणेश, पुरन्दर, * विडौजस्, अप्सरोनाथ, वासव, हरिवाहन, मरुत्पति,

---

* 'अचेञ्णिति' तथा 'दिव औत्' इन दोनों सूत्रों के नियम के अनुसार 'द्यौः' पद से दिव् और द्यो पद निकलता है।

* सुत्रामा, सुत्रामान् और सूत्रामान् ऐसा पाठान्तर भी है।

* विट् व्यापकमोजः यस्य विडौजाः। अप्सरसां नाथः अप्सरोनाथः।

Scanned by CamScanner

मरुत्वान्, वृषन् ऐरावणाधिप, शतमन्यु, पुराशाह, पुरुहूत, कौशिक, संक्रन्दन, मघवत्, पुलोमारि और मरुत्सख (पु०) ये ३३ शब्द इन्द्र देवराज के नाम हैं।

दिशा और दिगम्बर मुनि के नाम

काष्ठा ककुब् दिगाशा च, दक्षकन्या तथा हरित्।
तत्पर्यायपर योज्यं, प्राज्ञैः पालगजाम्बरम् ॥६१॥

काष्ठा, ककुप् दिश्, आशा, दक्षकन्या और हरित् (स्त्री०) ये ६ दिशा के नाम हैं। इनके अन्त * में 'पाल' शब्द जोड़ देने से काष्ठापाल और दिक्पाल (पु०) आदि दिक्पाल के, 'गज' शब्द जोड़ देने से दिग्गज (पु०) आदि दिग्गज के तथा वस्त्रवाचक 'अम्बर' आदि शब्द जोड़ देने से दिगम्बर मुनि के नाम बन जाते हैं।

वायु, भीम और हनुमान के नाम

पवनः पवमानश्च, वायु र्वातोऽनिलो मरुत्।
समीरणो गन्धवाहः, श्वसनश्च सदागतिः ॥६२॥
नभस्वान् मातरिश्वा च, चरण्यु र्जवनश्चलः।
प्रभञ्जनोऽस्य पर्याय-पुत्रो भीमाञ्जनात्मजौ। ६३॥

पवन, पवमान, वायु, वात, अनिल, मरुत्, समीरण, गन्धवाह, गन्धवह, श्वसन, सदागति, नभस्वत्, मातरिश्वन्, * चरण्यु, जवन, चल और प्रभञ्जन (पु०) ये १७ वायु के नाम हैं।

इन वायु के नामों के अन्त में 'पुत्रवाचक' शब्द जोड़ देने से भीम तथा अञ्जनात्मज (पु०) अर्थात् हनुमान के नाम बन जाते हैं। जैसे-पवनपुत्र और वायुसूनु (पु०) आदि।

---

* तत्पर्यायेभ्यः परम्=अग्रे इत्यर्थः। * चराचरं यातीति चरण्युः।

अग्नि के नाम

तत्सखोऽग्निः शिखी वह्निः, पावकश्चाऽऽशुशुक्षणिः।
हिरण्यरेताः सप्तार्चि-र्जातवेदास्तनूनपात् ॥६४॥
स्वाहापति र्हुताशश्च, ज्वलनो दहनोऽनलः ।
वैश्वानरः कृशानुश्च, रोहिताश्वो विभावसुः ॥६५॥
वृषाकपिः समीगर्भो, हव्यवाहो हुताशनः ।

पवन के नामों के अन्त में 'सखि' आदि मित्रवाचक शब्द जोड़ देने से अग्नि के नाम बन जाते हैं । जैसे–* पवनसख (पु०) * आदि । तथा अग्नि, शिखिन्, वह्नि, पावक, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस् (पु०) सप्तार्चिष् न०) जातवेदस्, तनूनपात्, स्वाहापति, हुताश, ज्वलन, दहन, अनल, वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, विभावसु, वृषाकपि, समीगर्भ, हव्यवाह और हुताशन (पु०) ये २२ अग्नि के नाम हैं ।

कार्तिकेय के नाम

तदादिसूनुः सेनानीः, स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥६६॥
कार्तिकेयो विशाखश्च, कुमारः षण्मुखो गुहः ।
शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च, स्वामीशरवणोद्भवः ।६७।

अग्नि के नामों के अन्त में 'सूनु आदि पुत्रवाचक' शब्द जोड़ देने से कार्तिकेय के नाम बन जाते हैं । जैसे – अग्निसूनु, वह्निपुत्र (पु०) आदि । तथा सेनानी, स्कन्द, * शिखिवाहन, कार्तिकेय,

---

*राजाहः सखिभ्यष्टच् * वायुमित्र इत्यादि ।

* महादेव के नाम पद्य नं. ७१ में भी आये हैं ।

* मयूर की सवारी होने से शिखिवाहन तथा छह मुख होने से कार्तिकेय को षण्मुख कहते हैं ।

Scanned by CamScanner

विशाख, कुमार, षण्मुख, गुह, शक्तिधर, क्रौञ्चभेदिन्, स्वामिन् और शरजन्मोद्भव (पु०) ये १२ कार्तिकेय के नाम हैं।

* महादेव के नाम

तत्पिता शंकरः शम्भुः, शिवः स्थाणु महेश्वरः।
त्र्यम्बको धूर्जटिः शर्वः, पिनाकी प्रमथाधिपः ॥६८॥
त्रिपुरारि ÷ विशालाक्षो, ? गिरीशो नीललोहितः।
रुद्रेन्दुमौली यज्ञारि – स्त्रिनेत्रो वृषभध्वजः ॥६९॥
उग्रः शूली कपाली च, शिपिविष्टो भवो हरः।
उमापति विरूपाक्षो, विश्वरूपः कपर्द्यपि ॥७०॥

कार्तिकेय के नामों के अन्त में 'पितृवाचक' शब्द जोड़ देने से महादेव के नाम बन जाते हैं। जैसे – सेनानीपितृ और गुहजनक (पु०) आदि। तथा शंकर, शम्भु, शिव, स्थाणु महेश्वर, * त्र्यम्बक, धूर्जटि, शर्व, पिनाकिन् प्रमथाधिप, त्रिपुरारि, विशालाक्ष, + गिरीश नीललोहित, रुद्र, * इन्दुमौलि, यज्ञारि, त्रिनेत्र, वृषभध्वज, उग्र, शूलिन्, कपालिन, शिपिविष्ट, भव, हर, उमापति, विरूपाक्ष, विश्वरूप और कपर्दिन् पु०) ये महादेव के नाम हैं।

÷ पद्य नं. ६८ और ६९ में विशालाक्षा, गिरिशो ये पाठान्तर भी हो सकते हैं।

* 'इकः परो यणचोऽत्येके' जैनेन्द्रव्याकरण के इस वार्तिक के अनुसार विकल्प से 'त्रियम्बक' रूप भी बनता है,

+ तीन नेत्र होने से त्रियम्बक, मस्तक पर चन्द्र होने से इन्दुमौलि और त्रिशूलधारक होने से शूली कहते हैं।

* 'गिरौ पर्वते शेते' इति गिरिशः, गिरीशश्च।

गंगा और महादेव के नाम

भागीरथी त्रिपथगा, जाह्नवी हिमवत्सुता।
मन्दाकिनी द्युपर्याय–धुनी गंगा नदीश्वरी ॥७१॥

भागीरथी, त्रिपथगा, जाह्नवी, हिमवत्सुता, मन्दाकिनी, गंगा और नदीश्वरी (स्त्री०) ये ७ गंगा के नाम हैं। स्वर्ग के नामों के अन्त में 'धुनी' आदि नदीवाचक शब्द जोड़ देने से भी गंगा के नाम बन जाते हैं। जैसे – स्वर्धुनी, नाकनदी, स्वर्गधुनी (स्त्री०)। 'नदीश्वर' पाठान्तर है। जिससे नदी के नामों के अन्त में ईश्वर शब्द जोड़ देने से महादेव के नाम बनते हैं, ऐसा ध्वनित होता है।

ब्रह्मा और नारद के नाम

विधि र्वेधा विधाता च, द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः।
पद्म-पर्याय-योनिश्च, *पितामह विरिञ्चनौ ॥७२॥
हिरण्यगर्भः स्रष्टा च, प्रजापतिस्सहस्रपात्।
ब्रह्मात्मभ्रनन्तात्मा, कस्तत्पुत्रो हि नारदः ॥७३॥

विधि, वेधस्, विधातृ, द्रुहिण, अज, चतुर्भुज, ※ पितामह, * विरिञ्चन, हिरण्यगर्भ, स्रष्टन्, प्रजापति, सहस्रपाष्ट, ब्रह्मन्, आत्मभू, अनन्तात्मन् और क (पु०) ये १६ ब्रह्मा के नाम हैं।

तथा कमल के नामों के अन्त में 'योनि' शब्द जोड़ देने से भी ब्रह्मा के नाम बन जाते हैं। जैसे – कमलयोनि, पद्मयोनि और कुमुदयोनि (पु०) आदि। ब्रह्मा के नामों के अन्त में पुत्रवाचक,

---

* विरिञ्च और विरिञ्चि पाठान्तर भी हो सकते हैं। तथा चोक्तम्–'विरिञ्चः कमलासनः' अमरकोष स्वरवर्ग पद्य १२।

※ 'पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः' इत्यादि गणसूत्रेण डामहच्प्रत्ययान्तप्रयोगः।

शब्द जोड़ देने से नारद के नाम बन जाते हैं। जैसे – विधिपुत्र और ब्रह्मसूनु (पु०) आदि।

कृष्ण और लक्ष्मी के नाम

कृष्णो दामोदरो विष्णु–रुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः।
केशवश्च हृषीकेशः, शार्ङ्गी नारायणो हरिः॥७४॥
केशी मधु बलि वाणो, हिरण्यकशिपु मुरः।
तदादि–सूदनः शौरिः, पद्मनाभोऽप्यधोक्षजः॥७५॥
गोविन्दो वासुदेवश्च, *लक्ष्मीः श्रीर्गोमिनीन्दिरा।
तत्पतिः शैलभूम्यादि – धरश्चक्रधरस्तथा॥७६॥

कृष्ण, दामोदर, विष्णु, उपेन्द्र, पुरुषोत्तम, केशव, हृषीकेश, शार्ङ्गिन्, नारायण, हरि, : केशिसूदन, मधुसूदन, बलिसूदन, बाण–सूदन, हिरण्यकशिपुसूदन, मुरसूदन, □ शौरि, पद्मनाभ, अधोक्षज, गोविन्द और वासुदेव (पु०) ये २१ कृष्ण के नाम हैं।

लक्ष्मी, श्री, गोमिनी और इन्दिरा (स्त्री०) ये लक्ष्मी (कृष्ण की स्त्री) के नाम हैं इनके अन्त में 'पतिवाचक' शब्द तथा पर्वत और भूमि के नामों के अन्त में 'धर' शब्द जोड़ देने से भी कृष्ण के नाम बन जाते हैं। जैसे–लक्ष्मीपति, पर्वतधर और * भूमिधर (पु०) आदि। चक्रधर भी कृष्ण का नाम है।

---

*अवीतन्त्रीतरीलक्ष्मी—धीह्रीश्रीणामुणादिषु।
सप्तस्त्रीलिंगशब्दानां, न सुलोपः कदाचन॥

: इस पाणिनीय कारिका के अनुसार श्रीः और लक्ष्मीः यहां पर सु का लोप नहीं होता।

□ 'देवकीनन्दनः शौरिः' इत्यमरः। *यह पर्वत का भी नाम है

Scanned by CamScanner

कामदेव के नाम

तत्पुत्रो मन्मथः कामः, शङ्करारिरनन्यजः।
कायपर्याय-रहितो, मदनो मकरध्वजः ॥७७॥

कृष्ण के नामों के अन्त में 'पुत्र' -वाचक शब्द और शरीर के नामों के अन्त में 'रहित' शब्द अथवा आदि में 'अ' शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम बन जाते हैं। जैसे—कृष्णपुत्र, शौरिसूनु, कायरहित और अकाय (पु०) आदि। तथा मन्मथ, काम, *शंकरारि, अनन्यज, मदन और मकरध्वज (पु.) ये ६ भी कामदेव के नाम हैं।

बाण के नाम

शिलीमुखः शरो बाणो, मार्गणो रोपणः कणः।
इषुः काण्ड क्षुरप्रञ्च, नाराचं तोमरं खगः ॥७८॥

शिलीमुख, शर, बाण, मार्गण, रोपण, कण, इषु (पु.), काण्ड, क्षुरप्र, नाराच, तोमर (पु.न.) और खग (पु.) ये १२ बाण के नाम हैं।

धनुष और धनुष की कोटि के नाम

कार्मुकं धन्व चापं च, धर्म कोदण्डकं धनुः।
शिलीमुखाद्य-मासनं,※तत्कोटिमटनीं विदुः ॥७९॥

※काम के नाम पद्य नं. ८०, ८१, ८३, ८४ में भी हैं।

*'शम्बरारिः पाठान्तर भी हो सकता है।' 'शम्बरारि-र्मनसिजः।' इत्यमरः * 'तत्कोटिमर्टनिं विदुः' यह पाठान्तर भी हो सकता है क्योंकि ऐसे स्त्रीलिंग शब्दों में वैकल्पिक ङाप् होता है। जैसे—रात्रिः, रात्री, शकटिः; शकटी, आलिः; आली इत्यादि।

Scanned by CamScanner

कार्मुक, धन्वन् (न०), चाप, धर्मन्, धर्म, कोदण्डक और धनुष् (पु० न०) ये ७ धनुष् के नाम हैं। तथा बाणों के नामों के अन्त में 'आसनवाचक' शब्द जोड़ देने से भी धनुष् के नाम बन जाते हैं। जैसे—शिलीमुखासन, शराशन और इष्वासन (न०) आदि। धनुष की कोटि (अग्रभाग, नोक) को अटनी या अटनि (स्त्री०) कहते हैं।

पुष्प और काम के नाम

पुष्पं सुमनसः फुल्लं, लतान्तं प्रसवोद्गमौ।
प्रसूनं कुसुमं ज्ञेयं, तदाद्यस्त्रशरः स्मरः ॥८०॥

पुष्प (न०), सुमनस् (स्त्री० बहु०), फुल्ल, लतान्त (न०), प्रसव, उद्गम (पु०), प्रसून और * कुसुम (न०) ये ८ पुष्प (फूल) के नाम हैं इनके अन्त में 'अस्त्र' (हथियार) वाचक शब्द और शर (बाण) के नामों को जोड देने से स्मर (काम) के नाम बन जाते हैं। जैसे पुष्पास्त्र, कुसुमायुध, प्रसूनहेति; पुष्पशर और प्रसूनबाण (पु०) आदि। इस पद्य में × सुमनसः यह बहुवचन का रूप है।

मन और कामदेव के नाम

स्वान्तमास्वनितं चित्तं, चेतोऽन्तःकरणं मनः।
हृदयं विशिखाकूतं, मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥८१॥

स्वान्त, आस्वनित, चित्त, चेतस्, अन्तःकरण, मनस्, हृदय, विशिख और आकूत (न०) ये ९ मन के नाम हैं।

× 'स्त्रियः सुमनसः पुष्पम्। इत्यमरः। * कौ=पृथिव्यां शोभां सूते इति कुसुमम्।

इनके अन्त में 'भव' अथवा 'उद्भव' वाचक शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम बन जाते हैं। जैसे—मनोभव, स्वान्तोद्भव, मनोज और चित्तजन्य (पु.) आदि।

धनुष की डोरी और भ्रमर के नाम

मौर्वी जीवा गुणो गव्या, ज्याऽलि भृङ्गः शिलीमुखः।
भ्रमरः षट्पदो ज्ञेयो, द्विरेफश्च मधुव्रतः ।८२।

मौर्वी, जोवा (स्त्री.), गुण (पु.), गव्या और ज्या (स्त्री.) ये ५ धनुष की डोरी के नाम हैं। अलि, भृंग, शिलीमुख, भ्रमर, षट्पद, द्विरेफ और मधुव्रत (पु.) ये ७ भ्रमर के नाम हैं।

काम, उसके धनुष और हथियार के नाम

मौर्व्यादि—प्रान्तमल्यादि, कन्दर्पस्यैक्षवं धनुः।
हेतिरस्त्रायुधं शस्त्रं, पुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः।८३।

अलि आदि भ्रमर के नामों के अन्त में मौर्वी आदि डोरी के नामों को जोड़ देने से काम के नाम बन जाते हैं। जैसे—अलि-मौर्वी (स्त्री.) आदि। काम के धनुष को ऐक्षव (न.) कहते हैं।

हेति (स्त्री.), अस्त्र, आयुध और शस्त्र (न.) ये हथियार के नाम हैं। पुष्प के नामों के अन्त में हथियार और बाण के नामों को जोड़ देने से भी कामदेव के नाम बन जाते हैं। जैसे—पुष्पहेति और पुष्पबाण (पु.) आदि।

ध्वजा और काम के नाम

ध्वजा पताका केतुश्च, चिह्नं तद्वैजयन्त्यपि।
तत्तदन्तो ? झषाद्यादिः, शम्भो विघ्नकरः स्मरः।८४

* ध्वजा (त्रि) पताका (स्त्री) केतु (पु.), चिह्न (न.) और वैजयन्ती (स्त्री.) ये ५ ध्वजा के नाम हैं। मछली के नामों के अन्त में इन ध्वजा के नामों को जोड़ देने से और शंकर के नामों के अन्त में 'विघ्नकर' शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम बन जाते हैं। जैसे झषध्वज, मीनकेतु और × शिवविघ्नकर (पु.) इत्यादि।

तलवार के नाम

कौक्षेयकोऽसि निस्त्रिंशः, कृपाणः करवालकः।
तरवारि र्मंडलाग्रः, खड्गनामावलि * र्मता ।८५।

कौक्षेयक, असि, निस्त्रिंश, कृपाण, करवालक, तरवारि, मण्डलाग्र और खड्ग (पु.) ये ८ तलवार के नाम हैं।

सेना के नाम

अक्षौहिणी बलानीकं, वाहिनी साधनं चमूः।
ध्वजिनी प्रतना सेना, सैन्यं दण्डो वरूथिनी ।८६।

× अक्षौहिणी (स्त्री.), बल, अनीक (न.) वाहिनी (स्त्री.), साधन (न.), चमू, ध्वजिनी, + प्रतना, सेना (स्त्री.) सैन्य (न.), दण्ड (पु.) और वरूथिनी (स्त्री.) ये १२ सेना के नाम हैं।

---

* ते ते ध्वजपर्याया अन्ते यस्य। झषादमीनपर्यायश्चादौ यस्य। अर्धर्चादिगणे पाठात् पुंल्लिगा नपुंसकलिंगाश्च। काम ने शिवजी की तपस्या में विघ्न किया था।

*'तरवारि र्मण्डलाग्रं, खड्गनामावलि र्विदुः' इति मूलपाठः।

× २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल सेना के समूह को अक्षौहिणी कहते हैं। 'पूर्व-पदात्सं-ज्ञायामगः' इस वार्तिक इस शब्द में णत्व हुआ है

युद्ध के नाम

कदनं +समरं युद्धं, संयुगं कलहं रणम् ।
सङ्ग्रामं सम्परायाजी, संयदाहु र्महाहवम् ।८७।

कदन, समर (पु. न.), युद्ध (न.) संयुग, कलह (पु), रण (पु. न), सङ्ग्राम, सम्पराय (पु.), आजि, संयत् (स्त्री.) और महाहव (पु.) ये १२ युद्ध के नाम हैं।

हस्ती (हाथी) और महावत के नाम

गजो मतंगजो हस्ती, वारणोऽनेकपः करी ।
दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी, द्विरदेभ-मितंगमाः ।८८।
शुण्डालः सामजो नागो, मातंगः पुष्करी द्विपः ।
करेणुः सिन्धुरस्तेषु, यन्ता याता निषाद्यपि ।८९।

गज, मतंगज, हस्तिन्, वारण, अनेकप, करिन्, दन्तिन्, स्तम्बेरम, कुम्भिन्, द्विरद, इभ, ×मितंगम, शुण्डाल, सामज, नाग, मातंग, पुष्करिन्, द्विप, करेणु और सिन्धुर (पु) ये २० हाथी के नाम हैं। इनके अन्त में यन्तृ, यातृ और निषादिन्, (पु.) शब्द जोड़ देने से महावत के नाम बन जाते हैं। जैसे—गजयन्तृ, गजयातृ और गजनिषादिन् (पु.) आदि।

सिंह, तेंदुए और अष्टापद के नाम

नागाद्यरिः कण्ठीरवो, मृगेन्द्रः केशरी हरिः ।
व्याघ्रश्चमूरः शार्दूलः, शरभोऽष्टापदोऽष्टपात् ।९०।

+'अतनाऽनोकिनी चमूः' इत्यमरः। षटादिगण 'कदि-क्रदि कलदि' इति पठित्वा त्रयोऽप्यनिदिताः इति नान्वो। तन्मतेन कदनमिति प्रयोगः। अन्यत्र मते तु कन्दनम् इति विशेषः। × मितं गच्छतीति मितंगमः।

Scanned by CamScanner

हस्ती के नामों के अन्त में 'अरि' वाचक शब्द जोड़ देने से सिंह के नाम बन जाते हैं। जैसे—गजारि (पु०) आदि। तथा कण्डीरव, मृगेन्द्र, केशरिन्, +केसरिन् और हरि (पु.) ये ५ सिंह के नाम हैं।

व्याघ्र, चमूर और शार्दूल (पु०) ये ३ तेंदुए के नाम हैं। शरभ, अष्टापद और अष्टपात् (पु०) ये ३ अष्टापद के नाम हैं।

सुअर और ऊँट के नाम

क्रोडो वराहो दंष्ट्री च, धृष्टिः पोत्री च शूकरः।
उष्ट्रो मयः भ्रुंखलिकः करभः शीघ्रगामुकः।९१।

क्रोड, वराह, दंष्ट्रिन्, धृष्टि, पोत्रिन् और शूकर (पु०) ये ६ सुअर के नाम हैं। उष्ट्र, मय, भ्रुंखलिक, करभ और शीघ्रगामुक (पु०) ये ५ ऊँट के नाम हैं। सूकर यह पाठान्तर भी है।

कुत्ते के नाम

कौलेयकः सारमेयो, मण्डलः श्वा पुरोगतिः।
जिह्वापो ग्रामशार्दूलः, कुक्करो रात्रिजागरः।९२।

कौलेयक, सारमेय, मण्डल, श्वन्, पुरोगति, जिह्वाप, ग्राम-शार्दूल कुक्कर और रात्रिजागर (पु.) ये ९ कुत्ते के नाम हैं।

सुवर्ण (सोने) और चांदी के नाम

हेम आष्टापदं स्वर्णं, कनकाजुंन-काञ्चनम्।
सुवर्णं हिरण्यं भर्म, जातरूपं च हाटकम्।९३।
तपनीयं कलधौतं, कार्तस्वरं शिलोद्भवम्।
रूप्यं रजतं गुलिका, शुक्तिजं मौक्तिकं तथा।९४।

+ 'हर्यक्षः केसरी हरिः' इत्यमरः। सिंहवर्गे पद्य- १। करिशब्दः इदन्तोऽपि विद्यते।

Scanned by CamScanner

हेमन् (न०), अष्टापद (पु० न०), स्वर्ण, कनक, अर्जुन, काञ्चन, सुवर्ण, हिरण्य, भर्मन्, जातरूप, हाटक, तपनीय, कलधौत, कार्तस्वर और शिलोद्भव (न०) ये १५ सुवर्ण के नाम हैं।

रूप्य, रजत (न०) और गुलिका (स्त्री०) ये तीन चांदी के नाम हैं। शुक्तिज और मौक्तिक (न०) ये २ मोती के नाम हैं।

धन और कुबेर के नाम

वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं, स्वार्थं+रा द्रविणं धनम्।
कस्वरं तत्पतिं प्राहुः, कुबेरं चैकपिंगलम् ।९५।
वैश्रवणं राजराज-मुत्तराशापतिं तथा।
अलकानिलयं श्रीदं, धनपर्यायदायदम् ।९६।

वित्त, वस्तु, वसु, द्रव्य (न०), स्व (पु० न०), अर्थ, रै (पु०), द्रविण, धन और कस्वर (न०) ये दश धन के नाम हैं। इनके अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से कुबेर के नाम बन जाते हैं। जैसे—धनपति और द्रविणवल्लभ (पु०) आदि।

तथा कुबेर, एकपिंगल, वैश्रवण, राजराज, उत्तराशापति, अलकानिलय और श्रीद (पु०) ये ७ कुबेर के नाम हैं। तथा धन के नामों के अन्त में 'दाय' वा 'द' शब्द जोड़ देने से भी कुबेर के नाम बन जाते हैं। जैसे-धनदाय और धनद (पु०) आदि।

देश और नगरी के नाम

राष्ट्रं जनपदो निर्गो, जनान्तो विषयः स्मृतः।
पूः पुरं पुरी नगरी, पत्तनं पुट-भेदनम् ।९७।

राष्ट्र (न०), जनपद, निर्ग, जनान्त और विषय (पु०)

+ 'रायो हलि' इस सूत्र से ऐकार को आकार हो गया है।

ये ५ देश के नाम हैं । पुर् (स्त्री०) पुर (न०) पुरी, नगरी (स्त्री०), पत्तन और पुटभेदन (न०) ये ६ नगरी के नाम हैं ।

मुख और कान के नाम

वक्त्रं लपनमास्यं च, वदनं मुखमाननम् ।
श्रवणं श्रोत्रं श्रवश्चापि, कर्ण च श्रुति विदुः । ९८॥

वक्त्र, लपन, आस्य, वदन, मुख और आनन (न०) ये ६ मुख के नाम हैं । श्रवण, श्रोत्र, श्रवस्, (न०) कर्ण (पु०) और श्रुति (स्त्री०) ये ६ कान के नाम हैं ।

नेत्र और कटाक्ष के नाम

दृगक्षि चक्षुर्नयनं, दृष्टि नेत्रं विलोचनम्
कटाक्षः केकरापांग, विभ्रमस्तस्य वैकृतम् ॥९९॥

दृश् (स्त्री०), अक्षि, चक्षुष्, नयन (न०) दृष्टि (स्त्री०), नेत्र और विलोचन (न०) ये ७ नेत्र के नाम हैं । कटाक्ष पु० न०) केकर (पु०), अपांग पु०न०) और विभ्रम (पु०) ये ४ नेत्रविकार आंख चलाने या आंख मारने) के नाम है ।

बाहु, हाथ, कन्धा और अँगुलियों के नाम

दो र्दोषा च भुजो बाहुः, पाणि र्हस्तः करस्तथा ।
प्राहुर्बाहुशिरोंऽसश्च, हस्तशाखा कराङ्गुलिः ।१००।

दोष् (पु० न०), दोषा (स्त्री.) भुज और बाहु (पु. स्त्री.) ये ४ बांह के नाम हैं । पाणि, हस्त और कर (पु.) ये ३ हाथ के नाम हैं । बाहुशिरस् और अंस (न.) ये २ कन्धे के नाम हैं । हस्त के नामों के अन्त में 'शाखा' शब्द जोड़ देने से अँगुलियों के नाम बन जाते हैं । जैसे – हस्तशाखा और करशाखा (स्त्री.) आदि । तथा करांगुलि (स्त्री.) यह भी अँगुली का नाम है ।

Scanned by CamScanner

नाममाला उत्तरार्ध

ओष्ठ और गर्ल के नाम

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठो, वर्णितो दशनच्छदः ।
शिरोधरो गलो ग्रीवा, कण्ठश्च धमनीधमः ॥१०१॥

+ दन्तवासस्, अधर, ओष्ठ और * दशनच्छद (पु.) ये ४ ओष्ठ (ओंठ) के नाम हैं। शिरोधर, गल (पु.), ग्रीवा (स्त्री.), कण्ठ (पु.) धमनी (स्त्री.) और धम (पु.) ये ६ गले के नाम हैं।

नासिका, छाती, कूख, पेट और स्तन के नाम

नासा घ्राणभूरो वक्षः, कुक्षिः स्याज्जठरोदरम् ।
स्तनः पयोधरः कुचो, वक्षोज इति वर्णितः ॥१०२॥

नासा (स्त्री.) और घ्राण (नं.) ये २ नासिका (नाक) के नाम हैं। उरस् और वक्षस् (न.) ये २ छाती के नाम हैं। कुक्षि (पु.) यह कूख अर्थात् गर्भस्थली का नाम है।

जठर और उदर (न.पु.) ये २ पेट के नाम हैं। स्तन, पयोधर, कुच और वक्षोज, (पु.) ये ४ स्तन के नाम हैं।

कमर, नितम्ब, घुटने और पैर के नाम

कटिः श्रोणि नितम्बश्च, जघनं जानु जह्नु च ।
चलनं चरणं पादं, क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदं विदुः ॥१०३॥

+ 'ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी' इत्यमरः। इत्यमरप्रमाणेन सकारान्तोऽयं शब्दः। * 'रदनच्छदः' इति पाठान्तरम्।

Scanned by CamScanner

कटि, ×श्रोणि और श्रोणी (स्त्री०) ये ३ कमर के नाम हैं। नितम्ब (पु०) यह कमर के पिछले भाग का नाम है। जघन (न०) यह स्त्री की कमर के अगले भाग का नाम है।

जानु और जह्नु (न०) ये जांघ या घुटने के नाम हैं। चलन (न०), चरण; पाद (पु० न०), क्रम, अङ्घ्रि (पु० न०) और पद (न०) ये ६ पग (पैर) के नाम हैं।

शिर, प्रेरित वस्तु और वाणी के नाम

शिरो मूर्धोत्तमाङ्गं कं, प्रारभ्यं प्रेरितेरितम्।
वाग्वचो वचनं वाणी, भारती गीः सरस्वती ।१०४।

शिरस् (न०), मूर्धन् (पु०), उत्तमांग और क (न०) ये ४ शिर के नाम हैं। प्रारभ्य, प्रेरित और ईरित (त्रि०) ये ३ प्रेरित वस्तु के नाम हैं। जैसे प्रेरित पुरुष, प्रेरिता स्त्री और प्रेरित वचन आदि। वाच् (स्त्री०), वच्स, वचन (न०) वाणी, भारती, गिर् और सरस्वती (स्त्री०) ये ७ वाणी के नाम हैं।

सिंह, हाथी, मेघ, घोड़ा, गाय के बच्चे की आवाज

सिंहद्विपघने गर्जो, हेषाऽश्वे बृंहितं गजे।
स्फीत्कृतं धेनुकलभे, स्तनितं जलदे तथा ।१०५।

सिंह, हाथी और मेघ की आवाज को गर्ज (पु०) कहते हैं। घोड़े के हींसने को हेषा (स्त्री०), हाथी की बोली को बृंहित (न०) कहते हैं। गाय के बच्चे की बोली को स्फीत्कृत (न०) और मेघ की गर्जना को स्तनित (न०) भी कहते हैं।

× 'कटिः श्रोणिः कवुअती' इति तथा 'स्त्रीकट्याः जघनं पुरः' इत्यमरः विशेषः। — पैर के नामों के अन्त में शाखा शब्द जोड़ देने से पैर की अँगुलियों के नाम बन जाते हैं। जैसे—चरणशाखा आदि।

Scanned by CamScanner

रथ, शंख, घंटा, शृंखला, मैथुन आदि की आवाज

रथस्वने चीत्कृतं मन्ये, शंखे घण्टौ च हुङ्कृतं ।
शीत्कृतं मणितं कामे, खट्कृतं शृंखलायुधे ॥१०६॥

रथ के शब्द को चीत्कृत (न.) कहते हैं। शंख और घंटा (आदि) की आवाज को हुङ्कृत (न.) कहते हैं। मैथुन के शब्द को शीत्कृत और मणित (न.) कहते हैं तथा शृंखला (सांकल) और आयुध (हथियार) के शब्द को खट्कृत (न.) कहते हैं।

धनुष, क्रौञ्च, हंस की आवाज, या बिछुओं के नाम

झञ्झीरकं तुलाकोटिः, नूपुरं तत्र संसृतम् ।
झाङ्कृतं चाप भवति, केङ्कृतं क्रौञ्चहंसयोः ॥१०७॥

झञ्झीरक (न.), तुलाकोटि (पु.) और नूपुर (न.) ये ३ बिछुओं के नाम हैं। बिछुओं (स्त्री. का गहना जो पैरों की अंगुलियों में पहिना जाता है) के शब्द को संसृत (न.) कहते हैं, धनुष के शब्द को झाङ्कृत (न.) कहते हैं और क्रौञ्च पक्षी तथा हंस की बोली को केङ्कृत (न.) कहते हैं।

जानी हुई वस्तु और मृत प्राणी के नाम

प्रतीतं संस्तुतं लब्धं, दृष्टं परिचितं स्मृतम् ।
संस्थितं दशमीस्थं च, परासु च मृतं विदुः ॥१०८॥

प्रतीत, संस्तुत, लब्ध, दृष्ट, परिचित और स्मृत (त्रि.) ये ६ स्मृत (जानी हुई) वस्तु के नाम हैं। संस्थित, दशमीस्थ, परासु और मृत (त्रि.) ये चार मरे हुए प्राणी के नाम हैं।

क्रोध और हर्ष के नाम

रोषो हेडोऽप्यमर्षश्च, रुट् कोप-क्रोध-मन्यवः ।
हर्षः प्रमोदः प्रमदो, मुत्तोषानन्द उत्सवः ॥१०९॥

खेद, द्वेष, अमर्ष (पु.), ×रुष् (स्त्री.), कोप, क्रोध और मन्यु (पु.) ये ७ क्रोध के नाम हैं। हर्ष, प्रमोद, प्रमद (पु.), मुत् (स्त्री.), तोष, आनन्द और उत्सव (पु.) ये हर्ष के नाम हैं।

दया और बुद्धि के नाम

कृपाऽनुकम्पाऽनुक्रोशो, हन्तोक्तिः करुणा दया।
शेमुषी धिषणा प्रज्ञा, मनीषा धीस्तथाऽऽशयः ।११०।

कृपा, अनुकम्पा (स्त्री.), अनुक्रोश (पु.), हन्तोक्ति, करुणा और दया (स्त्री.) ये ६ दया के नाम हैं।

शेमुषी, धिषणा, प्रज्ञा, मनीषा, धी (स्त्री.) और * आशय (पु.) ये ६ बुद्धि के नाम हैं।

पण्डित के नाम

प्राज्ञ-मेधाविनौ विद्वान्, अभिरूपो विचक्षणः।
पण्डितः सूरिराचार्यो, वाग्मी नैयायिकः स्मृतः।१११।

प्राज्ञ, मेधाविन्, विद्वस्, अभिरूप, विचक्षण, पण्डित, सूरि, आचार्य, वाग्मिन् और नैयायिक (पु.) ये १० पण्डित (बुद्धिमान् या विद्वान्) के नाम हैं।

सभासद, सभा, राजा और राजसभा के नाम

पारिषद्यो बुधः सभ्यः; सदस्यः सत्सभोचितः।
परिषत्सभा-स्थानपती, राजसूयो नृपक्रतुः ।११२।

पारिषद्य बुध, सभ्य, सदस्य, सदुचित और सभोचित (पु.) ये ६ सभासद के नाम हैं। परिषत्, सभा (स्त्री.) और आस्थान (न.) ये ३ सभा के नाम हैं। सभा के नामों के अन्त

× 'प्रतिघो रुट्क्रुधौ स्त्रियौ' इत्यमरः। * मतिः इति पाठान्तरम्।

में पतिवाचक शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे— परिषत्पति, सभापति (पु.) आदि। राजसूय और नृपसूय (पु.) ये दो राजयज्ञ के नाम हैं।

आसन, संसार और जिनेन्द्र के नाम

विष्टरं मल्लिकां पीठ-मासन्दी-मासनं विदुः।
विष्टपं भुवनं लोको, जगत्तस्य पति र्जिनः।१३१।

बिष्टर (पु.), मल्लिका (स्त्री.), पीठ (न.) आसन्दी (स्त्री.) और आसन (न.) ये ५ आसन के नाम हैं। विष्टप, भुवन (न.), लोक (पु.) और जगत् (न.) ये ४ संसार के नाम हैं। संसार के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड देने से जिनेन्द्र भगवान् के नाम बन जाते हैं। जैसे—विष्टपपति (पु.)

सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, केवली धर्मचक्र-भृत्।
तीर्थङ्कर—स्तीर्थकर — स्तीर्थकृद्दिव्यवाक्पति।११४।

जिन, सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हत्, केवलिन्, धर्मचक्रभृत्, तीर्थंकर, तीर्थंकर, तीर्थंकृत् और दिव्यवाक्पति (पु.) ये १० जिनेन्द्र भगवान् के नाम हैं।

आदिनाथ के नाम

वर्षीयान्वृषभो ज्यायान्, पुरुराद्यः प्रजापतिः।
ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा, गौतमोनाभिजोऽग्रजः।११५।

वर्षीयस्, वृषभ, ज्यायस्, पुरु, आद्य, प्रजापति, ऐक्ष्वाकु, काश्यप, ब्रह्मन्, गौतम, नाभिज और अग्रज (पु.) ये १२ आदिनाथ (प्रथम जैन तीर्थंकर) के नाम हैं।

श्लोक ११३–संसार के नाम पद्य नं. ११५ में भी आये हैं।

Scanned by CamScanner

महावीर स्वामी के नाम

सन्मति र्महति र्वीरो, महावीरोऽन्त्यकाश्यपः ।
नाथान्वयो वर्धमानो, यत्तीर्थमिह साम्प्रतम् ।११६।

सन्मति, महति, वीर, महावीर, अन्त्यकाश्यप, नाथान्वय और वर्धमान (पु.) ये महावीर या वर्धमान स्वामी के नाम हैं। इस समय इस भरतक्षेत्र में इन्हीं का बताया धर्म चल रहा है।

वस्त्र और दिगम्बर मुनि के नाम

चेलं निवसनं वास—श्चीरमम्बर—मंशुकम् ।
वस्त्राद्यन्तो दिगाद्यादिः, संज्ञितो वृषभेश्वरः ।११७।

चेल, चैल, निवसन, वासस् चीर, अम्बर और अंशुक (न.) ये ७ वस्त्र के नाम हैं। दिशा के नामों के अन्त में 'चेल' आदि वस्त्र के नामों को जोड़ देने से वृषभेश्वर (पु.) अर्थात् दिगम्बर मुनि के नाम बन जाते हैं। जैसे—दिगम्बर आदि।

केशर, कस्तूरी और कपूर के नाम

कुंकुमं रुधिरं रक्तं, कस्तूरी मृगनाभिजा ।
कर्पूरं घनसारं च, हिमं सेवेत पुण्यवान् ।११८।

कुङ्कुम, रुधिर और रक्त (न.) ये तीन केशर के नाम हैं। कस्तूरी और मृगनाभिजा (स्त्री.) ये २ कस्तूरी के नाम हैं। कर्पूर (पु. न.), घनसार और हिम (पु.) ये ३ कपूर के नाम हैं। इन सब वस्तुओं का भोग पुण्यात्मा करते हैं।

लेपन, गहने और माला के नाम

समालम्भोऽङ्गरागश्च, प्रसाधन—विलेपनम् ।
भूषणाभरणं रुच्यं, माल्यं माला गुणस्रजौ ।११९।

Scanned by CamScanner

समालम्भ, अंगराग (पु.), प्रसाधन और विलेपन (न.) ये ४ लेपन (लेप) के नाम हैं। भूषण, आभरण और वच्य (न.) ये ३ गहने (जेवर) के नाम हैं।

माल्य (न.), माला (स्त्री.), गुण (न.) और स्रज् (स्त्री.) ये चार माला के नाम हैं।

करधोनी (करडोरा) के नाम

मेखला रशना काञ्ची, हेमपर्याय–सूत्रकम्।
श्रोणिबिम्बे कटीसूत्रं, मानसूत्रमिवाहितम् ।१२०।

मेखला, रशना, रसना, काञ्ची (स्त्री.) और कटीसूत्र (न.) ये ६ करधोनी के नाम हैं। तथा सुवर्ण के नामों के अन्त में 'सूत्र' शब्द जोड़ देने से भी करधोनी के नाम बन जाते हैं। जैसे— सुवर्णसूत्र और हेमसूत्र (न.) आदि)।

वह करधोनी श्रोणि अर्थात् कमर में ऐसी शोभती है, मानो कमर के नापने का सूत्र (कपड़े का मीटर गज, या फुट) ही हो।

मदिरा (शराब) के नाम

मदिरां मद्य–मैरेयं, शीधुं, कादम्बरी–मिराम्।
प्रसन्नां वारुणीं हालां, मधुवारां सुरां विदुः ।१२१।

मदिरा (स्त्री.), मद्य, मैरेय (न.), शीधु (पु. न.), कादम्बरी, इरा, प्रसन्ना, वारुणी, हाला, मधुवारा और सुरा (स्त्री.) ये ११ मदिरा (शराब) के नाम हैं।

मदिरा, मद्यपी और जुआरी के नाम

शुण्डाऽऽप्रवस्तद्विधायी, शौण्डो पद्येत मद्यपः।
सक्तोऽक्षद्यूतपानेषु, विचित्रा शब्दपद्धतिः ।१२२।

शुण्डा (स्त्री.) वह एक प्रकार के आसव (पु.) अर्थात् मदिरा का नाम है। इसके बनाने वाले और पीने वाले को शौण्ड

(पु.) कहते हैं तथा जो पांसों से खेलने में, जुवा खेलने में और मद्य पीने में आसक्त होता है उसे मद्यप (पु.) कहते हैं।

यद्यपि मद्य पीने वाले को ही मद्यप कहना चाहिये, जुआरी को नहीं; परन्तु 'शब्दानामनेकार्थः' इस नियम के अनुसार शब्दों के प्रयोग की परिपाटी विचित्र ही है इसलिये जुआरी को भी मद्यप कहते हैं।

घृत, दूध और छाछ के नाम

सर्पि हैयङ्गवीनाज्यं, दुग्धं क्षीरामृतं पयः।
उदश्विन्मथितं तक्रं, कालशेयं पिबेद् गुरुः।१२३।

सर्पिष्, हैयंगवीन और आज्य (न.) ये ३ घृत (घी) के नाम हैं। दुग्ध, क्षीर, अमृत और पयस् (न.) ये ४ दूध के नाम हैं। उदश्वित्, मथित, तक्र और कालशेय (न.) ये ४ छांछ के नाम हैं। इनका सेवन धनवान् करते हैं।

अवस्था, जवान, जवानी और वृद्ध के नाम

प्रायो वयो दशानेहाः, पूर्णं यौवनकं विदुः।
तारुण्यं यौवनं प्रास्थ्ये, वार्द्धीनः स्थविरो मतः।१२४।

प्रायस्, वयस्, (न.) दशा (स्त्री.) और अनेहस् (पु.) ये ४ अवस्था के नाम हैं। इनके अन्त में 'पूर्ण' शब्द जोड़ देने से यौवनक (पु.) अर्थात् युवा पुरुष के नाम बन जाते हैं। जैसे—प्रायःपूर्ण, दशापूर्ण और अनेहःपूर्ण (पु.) इत्यादि। तारुण्य और यौवन (न.) ये २ जवानी के नाम हैं। तथा प्रास्थ्य, वार्द्धीन और स्थविर (पु.) ये ३ बुड्ढे (वृद्ध) के नाम हैं।

कुल (वंश या गोत्र) के नाम

वंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्याद्,आम्नायः सन्ततिः कुलम्।
गोत्रो वर्गश्च सन्तानः,काव्यसेव कवेः स्थितिः।१२५।

वंश, अन्वय, अन्ववाय, आम्नाय (पु.), सन्तति (स्त्री.) कुल (न.), ओघ, वर्ग और सन्तान (पु.) ये ९ कुल के नाम हैं। कवि लोगों का कुल काव्य ही है।

हंस, ब्रह्मा, मयूर, हंसिनी और भेड़िया के नाम

हंसो मरालश्चक्रांगो, हंसवाहः सनातनः ।
मयूरो बर्हिणः केकी, शिखी प्रावृषिकस्तथा ।१२६।
नीलकण्ठः कलापी च, शिखण्डी तत्पतिर्गुहः ।
वरटा वारली हंसी, कोक ईहामृगो वृकः ।१२७।

हंस, मराल और चक्रांग (पु.) ये ३ हंस के नाम हैं। हंस के नामों के अन्त में 'वाह' शब्द जोड़ देने से सनातन अर्थात् ब्रह्मा के नाम बन जाते हैं। जैसे– हंसवाह (पु.) आदि।

मयूर, बर्हिण, केकिन्, शिखिन्, प्रावृषिक, नीलकण्ठ, कलापिन्, और शिखण्डिन् (पु.) ये आठ मयूर के नाम हैं।

मयूर के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से गुह अर्थात् कार्तिकेय के नाम बन जाते हैं। जैसे—मयूरपति (पु.) आदि। वरटा, वारली और हंसी (स्त्री.) ये ३ हंसिनी के नाम हैं। कोक, ईहामृग और वृक (पु.) ये ३ भेड़िये के नाम है।

हरिण, चन्द्रमा, गरुड़ और सर्प के नाम

हरिणो मृगः पृषत–स्तदङ्कः शर्वरीकरः ।
पन्नगोऽहि विषधरो, लेलिहानो भुजंगमः ।१२८।
नागोरगो फणी सर्पः, स्तद्वैरी विनतात्मजः ।
सुपर्णो गरुड़स्ताक्ष्यों, गरुन्मान् शकुनीश्वरः ।१२९।
इन्द्रजिन्मन्त्र–पूतात्मा, वैनतेयो विषक्षयः ।

Scanned by CamScanner

हरिण, मृग और पृषत (पु.) ये ३ हरिण के नाम हैं। इनके नामों के अन्त में 'अक' शब्द और रात्रि के नामों के अन्त में कर शब्द जोड़ देने से शर्वरीकर अर्थात् चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे हरिणांक और श्यामाकर (पु.) आदि।

पन्नग, अहि, विषधर, लेलिहान, भुजंगम, नाग, उरग, फणिन् और सर्प (पु.) ये ९ सर्प के नाम हैं। इनके अन्त में वैरिन्' वाचक शब्द जोड़ देने से विनतात्मज (पु.) अर्थात् गरुड़ के नाम बन जाते हैं। जैसे पन्नगवैरिन् (पु.) आदि तथा सुपर्ण, गरुड़,तार्क्ष्य, गरुत्मत्, शकुनीश्वर, इन्द्रजित्, मन्त्रपूतात्मन्, वैनतेय और विषक्षय (पु.) ये ९ भी गरुड़ के नाम हैं।

इन्द्रिय के नाम

खमिन्द्रियं हृषीकं च, श्रोतोऽक्षं करणं विदुः।१३०।

ख, इन्द्रिय, हृषीक, श्रोतस् अक्ष और करण (न.) ये ६ इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, नेत्र और कर्ण,) के नाम हैं।

पुण्य, पाप और जिनेन्द्र के नाम

पुण्यं भाग्यं च सुकृतं, भागधेयं च सत्कृतम्।
अघमंहश्च दुरितं, पाप्मा पापं च किल्विषम्।१३१।
वृजिनं कलिलमेनो, दुष्कृतं तज्जयी जिनः।

पुण्य, भाग्य, सुकृत, भागधेय और सत्कृत (न.) ये ५ पुण्य के नाम हैं। अघ, अहस्, दुरित (न.) * पाप्मन् (पु.), पाप, किल्विष, वृजिन, कलिल, एनस् और दुष्कृत (न.) ये १० पाप के नाम हैं। पाप के जीतने वाले को जिन कहते हैं।

---

* 'अस्त्री पंकः पुमान्पाप्मा, पापं किल्विषवल्कषम्' इत्यमरः। अतएव पाप्मन्शब्दः पुल्लिंगः।

Scanned by CamScanner

मकान के नाम

सदनं सद्म भवनं, धिष्ण्यं, वेश्माथ मन्दिरम् ।१३२।
गेहं निकेतनागारं, निशान्तं निर्वृतं गृहम् ।
वसत्यवसथावासं, स्थानं धामास्पदं पदम् ।१३३।
निकायं निलयं वस्त्यं, शरणं विदुरालयम् ।

सदन, सद्मन्, भवन, धिष्ण्य, वेश्मन्, मन्दिर, गेह, निकेतन, आगार, निशान्त, निर्वृत, (न.), * गृह (न. पु.), वसति, अवसथ, आवास, (पु.), स्थान, धामन्, आस्पद, पद (न.), निकाय, निलय, (पु.), वस्त्य और शरण (न.) ये आलय (मकान) के नाम हैं।

खाई और बंधान के नाम

खेयं खातं च परिखा, वप्रं स्याद् धूलिकुट्टिमम्।१३४।

खेय, खात (न.) और परिखा (स्त्री.) ये ३ खाई के नाम हैं। वप्र और धूलिकुट्टिम (न.) ये २ खाई के ऊपर रहने वाले मिट्टी के कूट अर्थात् बंधान के नाम हैं।

कोट, गोपुर, गली, महल, खूटी और टण्डों के नाम

प्राकारः परिधिः सालः, प्रतोली गोपुराकृतिः ।
प्रासादसौधहर्म्याणि, निर्व्यूहो मत्तवारणम् ।१३५।

प्राकार (पु.), परिधि (स्त्री.) और साल (पु.) ये ३ कोट या बाड़ के नाम हैं। गोपुर—(नगर के दरवाजे का आकार)

---

* गृहशब्दस्य रूपाणि नपुंसके वचनत्रयेऽपि दानशब्दवत् चलन्ति। किन्तु 'गृहाः पुंसि च भूम्नेव' इत्यमरवाक्यमनुकृत्य गृहशब्दस्य पुल्लिंगप्रयोगो बहुवचने एव जायते। यथा—गृहानिव नृपानिति 'धर्मशर्माभ्युदयग्रन्थे ३ सर्गे, १० दशमपद्ये।

जिसमें से लोग आते जाते हैं उसको प्रतोली कहते हैं। प्रतोली गली का भी नाम है। प्रासाद (पु.), सौध (पु. न.) और हर्म्य (न.) ये ३ बड़े महल के या क्रमशः देवालय, राजभवन और धनिगृह के नाम हैं। निर्व्यूह (पु.) खूंटी का नाम है। मत्तवारण (न.) छज्जे के नीचे के टण्डे या छपरी का नाम है।

झरोखे, बराबर और उपमा के नाम

वातायन-मनालम्ब-मालम्ब्यं सुखासनम् ।
समः सवर्णः सजातिः, सदृक्षः सदृशः सदृक् ।१३६।
तुल्यः सधर्मः सरूपः, तुला कक्षोपमाभिधा ।

वातायन, अनालम्ब, आलम्ब्य और सुखासन (न.) ये ४ झरोखे के नाम हैं। सम, सवर्ण, सजाति, सदृक्ष, सदृश, सदृश्, तुल्य, सधर्म और सरूप (त्रि.) ये ९ समान अर्थात् बराबर के नाम हैं। तुला और कक्षा (स्त्री.) ये दो उपमा के नाम हैं।

उपमान के नाम

विन्मन्यो विद्यमानश्च, गुरुस्थानोऽम्बुजाननः ।१३७।
सिंहादीति च पर्याय-मुपमानेषु योजयेत् ।

विन्मन्य, विद्यमान, गुरुस्थान, अम्बुजानन तथा सिंह (पु.) इत्यादि शब्द * उपमान के द्योतक हैं। अर्थात् ये शब्द उपमानों में जोड़ना चाहिये।

---

* जिस वस्तु से उपमा दी जाती है; वह वस्तु उपमान कहलाती है। जिस वस्तु को उपमा दी जाती है वह वस्तु उपमेय कहलाती है। जैसे मुख चन्द्रमा के समान है। यहां चन्द्रमा उपमान है और मुख उपमेय है।

Scanned by CamScanner

छल और उत्प्रेक्षा के नाम

व्यपदेशो निभं व्याजः; पदं व्यतिकरं छलम् ।१३८।
छद्म वृत्तान्तमुत्प्रेक्षा, शब्दमन्यं च निर्णयेत् ।

व्यपदेश, निभ, व्याज (पु. न.), पद (न.), व्यतिकर (पु. न.), छल और छद्मन् न.) ये ७ छल के नाम हैं। वृत्तान्त (न.) और उत्प्रेक्षा (स्त्री.) ये २ वार्ता के नाम हैं। इसी तरह और भी शब्द जानना।

समूह (समुदाय) के नाम

व्रातः पूगः समाजश्च, समूहः सन्तति व्रजः ।१३९।
व्यूहो निकायो निकरो, निकुरम्बं कदम्बकम् ।
ओघः समुदयः संघः ;संघातः समितिस्ततिः ।१४०।
निचयः प्रकरः पङ्क्तिः, समजस्तु पशुव्रजः ।

व्रात, पूग, समाज, समूह, सन्तति, व्रज, व्यूह, निकाय, निकर (पु.) निकुरम्ब, कदम्बक (न.) ओघ, समुदय, संघ, संघात, (पु.), समिति, तति (स्त्री.), निचय, प्रकर, (पु.) और पङ्क्ति (स्त्री.) ये २० समूह के नाम हैं। समज (पु.) यह—पशुओं के समुदाय (समूह) का नाम है।

समीप (पास) के नाम

समीपाभ्याशमासन्नम्, अभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ।१४१।
अविदूरं च निकटम्, अवलग्नमनन्तरम् ।

समीप, × अभ्यास, आसन्न, अभ्यर्ण, (न.), सन्निधि,

× 'सन्देशाभ्याशसविधम्—'इत्यमरः । विशषनिघ्नवर्ग-पद्य-६७ में यह अभ्याश शब्द तालव्य शकारयुक्त आया है।

(स्त्री.), अविदूर, निकट, अवलग्न और अनन्तर (न.) ये ९ पास के नाम हैं।

हल और बलभद्र के नाम

जित्या हलि हलं सीरं, लाङ्गलं तत्करो बल: ।१४२।
रेवती–दयितो नील–वसन: केशवाग्रज: ।

जित्या, हलि (स्त्री.), हल, सीर और लांगल (न.) ये ५ हल के नाम हैं। इनके अन्त में हस्तवाचक 'कर' आदि शब्द जोड़ देने से बलभद्र के नाम बन जाते हैं। जैसे–जित्याकर और सीरपाणि (पु.) आदि। तथा बल, रेवतीदयित, नीलवसन और केशवाग्रज (पु. ये ४ भी बलभद्र के नाम हैं। नीलशब्द के अन्त में वस्त्र के नामों को जोड़ने से भी नीलवसन आदि बलभद्र के नाम हो जाते हैं।

अर्जुन और भीम के नाम

अर्जुन: फल्गुनो जिष्णु:, श्वेतवाजी कपिध्वज: ।१४३।
गाण्डीवी कार्मुकी सव्य–साची मध्यमपाण्डव: ।
वृषसेन: सुनिर्मोको, दैत्यारि: शक्रनन्दन: ।१४४।
कर्णशूली किरीटी च, शब्दभेदी धनञ्जय:
कुरुकीचकयो: शत्रु:, वायुपुत्रो वृकोदर: ।१४५।

अर्जुन, फल्गुन, जिष्णु, श्वेतवाजिन्, कपिध्वज, गाण्डीविन्, कार्मुकिन्, सव्यसाचिन्, मध्यमपाण्डव, वृषसेन, सुनिर्मोक, दैत्यारि, शक्रनन्दन, कर्णशूलिन्, किरीटिन्, शब्दभेदिन् और धनञ्जय (पु.) ये १० अर्जुन के नाम हैं।

कुरुशत्रु, कीचकशत्रु, वायुपुत्र और वृकोदर (पु.) ये ४ भीम (द्वितीय-पाण्डव) के नाम हैं।

Scanned by CamScanner

काल (मौत) के नाम

समवर्ती यमः कालः, कृतान्तो मृत्युरन्तकः ।
धर्मराजः पितृपतिः, सूरसूनुः परेतराट् ।१४६।
यमुनो यमुनाभ्राता, श्राद्धदेवश्च दण्डभृत् ।

समवर्तिन्, यम, काल, कृतान्त, मृत्यु, अन्तक, धर्मराज, पितृपति, सूरसूनु, परेतराज्, * यमुन, यमुनाभ्रातृ, श्राद्धदेव और दण्डभृत् (पु.) ये १४ काल (मौत) के नाम हैं।

युधिष्ठिर (प्रथम पाण्डव) के नाम

तदात्मजोऽजातरिपुः, कौन्तेयो भरतान्वयः ।१४७।
कौरव्यो राजलक्ष्मा च, शौमवंश्यो युधिष्ठिरः ।

यमात्मल, × अजातरिपु, कौन्तेय, भरतान्वय, कौरव्य, राज-लक्ष्मन्, सौमवंश्य और युधिष्ठिर (पु.) ये ८ युधिष्ठिर अर्थात् प्रथम पाण्डव के नाम हैं।

काले रंग के नाम

कृष्णं नीलासितं कालं, धूमं धूम्रमलिप्रभम् ।१४८।

कृष्ण, नील, असित और काल (त्रि.) ये ४ काले रंग के नाम हैं। धूम, धूम्र और अलिप्रभ (त्रि. ये ३ विशेष काले रंग के नाम हैं।

---

* 'यमनं बन्धनं चोपरतौ, क्लीबं तु यमे पुमान्' इति मेदिनी। शमनः इति पाठान्तरमप्यर्हति। नाशकः इति तदर्थः।

× काल के नामों के अन्त में पुत्रवाचक शब्द जोड़ देने से भी युधिष्ठिर के नाम बन जाते हैं। धर्मात्मज, अजातरिषु। राज-यक्ष्मा इति पाठान्तरम्।

Scanned by CamScanner

अन्धकार और लालरंग के नाम

तमोऽन्धकारं तिमिरं, ध्वान्तं सन्तमसं तमम् ।
नोहितं रक्तमाताम्रं, पाटलं विशदारुणम् ।१४९।

तमस्, अन्धकार, तिमिर, ध्वान्त, सन्तमस्, तमस् और तम (न.) ये ६ अन्धकार के नाम हैं। लोहित, रक्त और आताम्र (त्रि.) ये ३ लाल रंग के नाम हैं। श्वेतमिश्रितलाल रंग को पाटल (त्रि.) कहते हैं।

सफेद रंग के नाम

श्वेतोऽर्जनः शुचिः श्येतो, वलक्षं सितपाण्डुरम् ।
शुक्लावदातं धवलं, पाण्डु शुभ्रं शशिप्रभम् ।१५०।

* श्वेत, अर्जुन, शुचि, श्वेत, वलक्ष, सित, पाण्डुर, शुक्ल, अवदात, धवल, पाण्डु, शुभ्र और शशिप्रभ (त्रि.) ये १४ सफेद रंग के नाम हैं।

पीले, हरे, रक्तवर्ण वा पंचवर्ण के नाम

पीतं गौरं हरिद्राभं, पालाशं हरितं हरित् ।
हरिणी लोहिनी शोणी, गौरीश्येनी पिशङ्ग्यपि।१५१।
सारंगी शबली काली, कलमाषी नीलपिङ्गली ।

पीत, गौर और हरिद्राभ (त्रि.) ये ३ पीले के नाम हैं। पालाश, हरित और हरित् (त्रि.) ये ३ हरे के नाम हैं। हरिणी, लोहिनी, शोणी, गौरी, श्येनी और पिशंगी (स्त्री.) ये

---

* 'गुणा, शुक्लादयः पुँसि, गुणिलिंगास्तु तद्वति ।' इत्यमरः। गुण (रंग) वाचक श्वेत आदि शब्द स्वयं तो पुंल्लिग ही हैं। किन्तु गुणसहित वस्तु के अर्थ में ये शब्द गुणवान् के लिंगयुक्त हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

६ रक्तवर्ण के नाम हैं। सारंगी, शबली, काली, कल्माषी और नीलपिंगली (स्त्री.) ये १५ पञ्चवर्ण के नाम हैं।

पराग और धूलि के नाम

परागं मधु किञ्जल्कं, मकरन्दं च कौसुमम् ।१५२।
उपचाराद्रजः पांशुं, रेणुं धूलिं च योजजेत् ।

× पराग, मधु (न.), किञ्जल्क, मकरन्द (पु.) और कौसुम (न.) ये ५ पराग के नाम हैं। रजस् (न.), पांशु, रेणु (पु.), धूलि और धूली (स्त्री.) ये ५ धूलि के नाम हैं। लोकाचार से पुष्प के नामों के अन्त में इन धूलि के नामों को जोड़ देने से भी पराग के नाम बन जाते हैं। जैसे—पुष्परजम् (न.) और प्रसूनरेण (प.) इत्यादि।

कलंक के नाम

कलङ्कावद्यमलिनं, किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम्।१५३।
निर्बाधमधमं पङ्कम्, मलीमसमपि त्यजेत् ।

कलंक (पु.), अवद्य, मलिन (न.), किञ्जल्क (पु.), लक्ष्मन्, लाञ्छन (न.), निर्बाध, अधम, पंक और मलीमस (पु. न.) ये १० कलंक के नाम हैं।

कीर्ति (यश) और साहस के नाम

जनोदाहरणं कीर्ति, साधुवादं यशो विदुः ।१५४।
वर्णं गुणावलिं ख्याति—मवधानं तु साहसम् ।

जनोदाहरण (न.), कीर्ति (स्त्री.), साधुवाद (पु.), यशस्, वर्ण (न.), गुणावलि और ख्याति (स्त्री.) ये ७ कीर्ति के नाम हैं। अवधान और साहस (न.) ये दो साहस के नाम हैं।

× अमरस्तु—'परागः सुमनोरजः'। 'किञ्जल्कः केशरोऽस्त्रियाम्'। मकरन्दः पुष्परसः इत्याह।

Scanned by CamScanner

आज्ञा, बात और कठोर के नाम

प्रेष्यादेशनिदेशाऽऽज्ञा-नियोगाः शासनं तथा ।१५५।
सन्देशः प्रिययो वार्ता, प्रवृत्तिः किम्वदन्त्यपि ।
कठोरं कठिनं स्तब्धं, कर्कश परुष दृढम् ।१५६।

प्रेष्य, आदेश, निदेश, (पु.), आज्ञा (स्त्री.), नियोग (पु.) और शासन (न.) ये ६ आज्ञा के नाम हैं। प्यारों के मौखिक समाचार को संदेश (पु.) कहते हैं। वार्ता, प्रवृति और किम्वदन्ती (स्त्री.) ये तीन नवीन बात के नाम हैं। कठोर, कठिन, स्तब्ध, कर्कश, परुष और दृढ़ (वि.) ये ६ कठोर (कड़े) के नाम हैं।

व्यर्थ, कोमल और नवीन के नाम

अश्लीलं काहलं फल्गु, कोमलं मृदु पेशलम् ।
प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं, नवं नूतनमग्रिमम् ।१५७।

अश्लील, काहल और फल्गु (न.) ये तीन व्यर्थ के नाम हैं। कोमल, मृदु और पेशल (वि.) ये तीन कोमल के नाम हैं। प्रत्यग्र, साम्प्रत, नव्य, नव, नूतन और आग्रम (त्रि.) ये ६ नवीन अर्थात् नई वस्तु के नाम हैं।

पुराने, आमन्त्रण और संशय के नाम

पुराणं जरठं जीर्णं, प्राक्तनं सुचिरन्तनम् ।
भो रे हंहो हे चामन्त्रे, किंचित्किंचन संशये ।१५८।

पुराण, जरठ, जीर्ण, प्राक्तन और सुचिरन्तन(त्रि.)ये ५ पुराने के नाम हैं। भो, रे, अरे, हंहो और हे (अ.) ये ५ आमन्त्रण (सम्बोधन) वाचक हैं। किञ्चित् और किञ्चन (अ.) ये दो संशय के नाम हैं।

Scanned by CamScanner

तत्काल, निषेध और ऊँचे के नाम

द्राक्क्षणेऽह्नाय सपदि, निषेधे मा न खल्वलम् ।
उच्चैरुच्चावचं तुङ्गम्-उच्चमुन्नतमुच्छ्रितम् ।।१५९।।

द्राक्क्षणे, अह्नाय और सपदि (अ.) ये ३ तत्काल के नाम हैं। मा, न, खलु और * अलम् (अ.) ये ४ निषेध करने में आते हैं। उच्चैस् (अ.), उच्चावच, तुंग, उच्च, उन्नत और उच्छ्रित (त्रि.) ये ६ ऊंचे के नाम हैं।

नीचे और साथ के नाम

नीचं न्यागानतं कुब्जं, नीचै र्ह्रस्वं पयेत्परम् ।
अमा सह समं साकं, सार्द्धं सत्रा सजूः समाः ।।१६०।।

नीच, न्यच्, आनत, कुब्ज, (त्रि.), नीचैस् (अ.) और ह्रस्व (त्रि.) ये ६ नीचे के नाम हैं। अमा, सह, सम, साक, सार्द्ध, सत्रा (अ.) सजुष् (स्त्री.) और समा (स्त्री.ब.) ये ७ 'साथ' के नाम हैं।

हमेशा और विरह के नाम

सर्वदा+सततं नित्यं, शश्वदात्यन्तिकं सदा ।
वियोगं मदनावस्थां, विरहं मल्लकं विदुः ।।१६१।।

सर्वदा, सततम्, नित्यम्, शश्वत्, आत्यन्तिकम् और सदा (अ.) ये ६ हमेशा के नाम हैं। वियोग, (पु.) मदनावस्था (स्त्री.) विरह और मल्लक (पु.) ये ४ काम के विरह के नाम हैं।

---

* 'मास्म मालं च वारणे इत्यमरः। नामवर्ग पद्य नं १२।

+'समो वा हिततयोः, लुं काममनसोरपि' इति कारिकया विकल्पेन मकारलोपः।

Scanned by CamScanner

राग और सहित के नाम

प्रेमाभिलाषमालम्ब्यं, रागं स्नेहमतः परम् ।
संहितं सहितं युक्तं, सम्प्रतं सम्भृतं युतम् ।१६२।
संस्कृतं समवेतं च, प्राहुरन्वेतमन्वितम् ।

प्रेमन्, अभिलाष (पु.), आलम्ब्य (न.), राग और स्नेह (पु.) ये ५ राग के नाम हैं । संहित, सहित, युक्त, सम्प्रक्त, सम्भृत, युत, संस्कृत, समवेत, अन्वीत और अन्वित (त्रि.) ये १० सहित (युक्त) के नाम हैं ।

मार्ग, गंगा और गायों के घेरा के नाम

वर्त्माध्वा सरणिः पन्थाः, मार्गः प्रचरसंचरौ ।१६३।
त्रिमार्गनामगा गंगा, घोषो गोमण्डलं व्रजः ।

वर्त्मन (न.), अध्वन् (पु.), सरणि, धरणि (स्त्री.), पथिन्, मार्ग, प्रचर और सञ्चर (पु.) ये ७ मार्ग के नाम हैं । मार्ग के नामों के आदि में 'त्रि' शब्द और अन्त में 'गा' शब्द जोड़ देने से गंगा के नाम बन जाते हैं । जैसे-त्रिमार्गगा और त्रिपथगा (स्त्री.) इत्यादि । घोष (पु.), गोमण्डल (न.) और व्रज (पु.) ये ३ गायों के घेरे के नाम हैं ।

धान, सींग वाले पशु और बछड़े के नाम

षाष्ठिकःकलमःशालिः,व्रीहिःस्तम्बकरिस्तथा ।१६४।
श्रृंगी दृतिहरि र्नाथि, हरिस्तर्यक्च श्रृंगिणः ।
वत्सः शकृत्करि र्जातः, षोडःषड् दशनःस्मृतः ।१६५।
पौरचतुष्पात् पशुस्तत्र, महिषी नाम देहिका ।

षाष्ठिक, कमल, शालि, सालि, व्रीहि और स्तम्बकरि (पु.) ये ६ धान के नाम हैं । श्रृंगिन्, दृतिहरि, नाथहरि और तिर्यच्

(पु.) ये ३ सींग वाले पशु के नाम हैं।

वरस, शक्रतकरि और जात (पु.) ये तीन बछड़े के नाम हैं। षोड और षड्दशंन (पु०) ये दो छह दांत वाले बछड़े के नाम हैं। गो, चतुष्पात्, पशु और तिर्यञ्च् ये ४ पशु के नाम हैं। महिषी और देहिका (स्त्री.) ये दो भैंस के नाम हैं।

चतुर और धूर्त के नाम

कृती नदीष्णो निष्णातः, कुशलो निपुणःपटुः।१६६।
क्षुण्णः प्रवीणः प्रगल्भः, कोविदश्च विशारदः।
विदग्धश्चतुरो धूर्तः, श्चाटुकृत्कितवः शठः।१६७।

कृतिन्, नदीष्ण, निष्णात, कुशल, निपुण, पटु, क्षुण्ण, प्रवीण, प्रगल्भ, कोविद, विशारद, विदग्ध और चतुर (त्रि.) ये १३ चतुर या कुशल के नाम हैं। धूर्त, चाटुकृत्, कितव और शठ (पु.) ये ४ धूर्त के नाम हैं।

धूर्त के नाम और मूर्ख के नाम

क्वापि नागरिको ज्ञेयो, गोत्रं संज्ञाङ्कनाम तत्।
मुग्धो मूढ़ो जडो नेडो, मूको मूर्खश्च कद्वदः।१६८।
स देवानांप्रियोऽप्राज्ञो, मन्दोधीनाम–वर्जितः।

कहीं-कहीं पर नागरिक (पु.) को भी धूर्त कहते हैं। गोत्र (न.), संज्ञा (स्त्री), अंक और नाम (न.) ये ४ नाम के नाम हैं। तथा मुग्ध, मूढ़, जड़, नेड, मूक, मूर्ख, कद्वद, देवानांप्रिय, अप्राज्ञ और मन्द (पु.) ये १० मूर्ख के नाम हैं। तथा बुद्धि के नामों के अन्त में 'वर्जित' वाचक शब्द जोड़ देने से भी मूर्ख के नाम बन जाते हैं। जैसे–धीवर्जित बुद्धिविहीन (पु.) आदि।

Scanned by CamScanner

अहंकारी और नीच के नाम

शौण्डीरो गर्वितः स्तब्धो, मानी चाहंयुरुद्धतः ।१६९।
उद्ग्रीव उद्धरो दृप्तो, नीचश्च पिशुनोऽधमः ।

शौण्डीर, गर्वित, स्तब्ध, मानिन्, अहंयु, उद्धत, उद्ग्रीव, उद्धर और दृप्त (त्रि.) ये ९ अहंकारी (घमण्डी) के नाम हैं। नीच, पिशुन और अधम (त्रि.) ये ३ नीच के नाम हैं।

चोर के नाम

चौरैकागारिकस्तेनाः, तस्करः प्रतिरोधकः ।१७०।
निशाचरो गूढचरो, हेरिकः पारिपान्थिकः ।

चोर, एकागारिक, स्तेन, तस्कर, प्रतिरोधक, निशाचर, गूढ़चर, हेरिक और पारिपान्थिक (पु.) ये ९ चोर के नाम हैं।

पत्थर, लोहा और सुवर्ण के नाम

प्रस्तरोपल-पाषाण-दृषद्धातुः शिला घनः ।१७१।
तत्र जातमयो लोहं, शतकुम्भ मयेत्परम् ।

प्रस्तर, उपल, पाषाण, (पु.), दृषत् (स्त्री.), धातु (पु.), शिला, शिली (स्त्री.) और घन (पु.) ये ७ पत्थर के नाम हैं। पत्थर के नामों के अन्त में 'जातिवाचक' शब्द जोड़ने से लोहे के नाम बन जाते हैं। जैसे—उपलजात (पु.) आदि। तथा अयस् (न.) और लोह (पु.न.) ये भी लोहे के नाम हैं। उपल आदि पत्थर के नामों के अन्त में 'जातिवाचक' शब्द जोड़ देने से सुवर्ण और शिलाजीत के नाम बन जाते हैं। जैसे-उपलजात आदि।

बहुत, स्पष्ट और आश्चर्य के नाम

साधीयोऽत्यर्थमत्यन्तं, नितान्तं सुष्ठु वै भृशम् ।१७।२
स्फुटं साधु खलु स्पष्टं, विशदं पुष्कलामलम् ।

Scanned by CamScanner

चित्राश्चर्यादभुतंचोद्यं, विस्मयःकौतुकोऽप्यहो ।१७३।

साधीयस् (न.), अत्यर्थम्, अत्यन्तम्, नितान्तम्, सुष्ठु और भृशम् (अ.) ये ६ बहुत के नाम हैं। स्फुट, साधु, (न.), खलु (अ.), स्पष्ट, विशद, पुष्कल और अमल (न.) ये ७ स्पष्ट के नाम हैं। चित्रम् आश्चर्यम्, अद्भुतम्, चोद्यम् (न.), विस्मय (पु.), कौतुक, कुतुक (पु न.), अहो (अ.) ये आश्चर्य के नाम हैं।

उत्साह, दुर्बल, धैर्य, पुराने और एकान्त के नाम

अभियोगोद्यमोद्योगाः, उत्साहो विक्रमो मतः ।
क्षामं क्षान्तं कृशं क्षीणं, हीनं जीर्णं पुरातनम् ।१७४।
शीर्णावसानं दूनं च, धैर्यं शौर्यं च पौरुषम् ।
रहोऽनुरहसोपांशु, रहस्यं च भिनत्ति कः ।१७५।

अभियोग, उद्यम, उद्योग, उत्साह और विक्रम (पु.) ये ५ उत्साह के नाम हैं। क्षाम, क्षान्त, कृश, क्षीण, हीन, जीर्ण, पुरातन, शीर्ण, अवसान और दून त्रि.) ये १० दुर्बल और पुराने के नाम हैं।

धैर्यं, शौर्यं और पौरुष (न.) ये ३ धैर्यं (वीरज) के नाम हैं। रहस् (अ.न.), अनुरहस् (न.), उपांशु (अ.) और रहस्य (त्रि.) ये ४ एकान्त या गुप्त के नाम हैं। किसी की गुप्त बात का प्रकट करना ठीक नहीं।

कंजूस के नाम

कीनाशः कृपणो लुब्धो, गृध्नु र्दीनोऽभिलाषुकः।×

× अगृध्नु र्धनमाददे' इति रघुवंशे प्रथमसर्गे। *स्त्रीलिंगबोधक टाप्प्रत्यय जोड़ देने से ये शब्द स्त्रीलिंग भी हो सकते हैं।

क्षिप्राशुमञ्जस्वरं शीघ्रं, सहसा झटिति द्रुतम् ।१७६।
तूर्णं जवः स्यदो रंहो, रयो वेगस्तरो लघु ।

क्षिप्र (म.), आशु, मञ्जस्, अर, शीघ्र (न.), सहसा, झटिति (अ.), द्रुत, तूर्ण (न.), जब, स्यद (पु.), रंहस् (न.), रय, वेग (पु.), तरस्, लघु (न.) ये शीघ्र के नाम है।

पाशबद्धशत्रु के नाम

पाशनीतः सितो बद्धः, सन्धानीतो नियन्त्रितः ।१७७।
नियमितः शृंखलितः, पिनद्धः, पाशितो रिपुः ।

पाशनीत, सित, बद्ध, सन्धानीत, नियन्त्रित, नियमित, शृंखलित, पिनद्ध और पाशित (पु) ये पाशबद्ध शत्रु के नाम हैं।

सुन्दर के नाम

कान्तं कमनं कम्रं च, कमनीयं× मनोहरम् ।१७८।
अभिरामं रमणीयं, रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् ।
चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं, प्रशस्तं हृद्य-बन्धुरम् ।१७९।
दर्शनीयं मनोज्ञं च, चित्तपर्याय-हारि च ।

कान्त, कमन, कम्र, कमनीय, मनोहर, अभिराम, रमणीय, रम्य, सौम्य, सुन्दर, चारु, श्लक्ष्ण, रुचिर, प्रशस्त, हृद्य, बन्धुर, दर्शनीय और मनोज्ञ (त्रि.) ये १८ सुन्दर के नाम हैं।

चित्त (मन) के नामों के अन्त में 'हारिन् वाचक' शब्द जोड़ देने से सुन्दर के नाम हो जाते हैं। जैसे-चित्तहारिन् (त्रि.)।

बर्फ और चन्द्रमा के नाम

अवश्यायं तुषारं च, प्रालेयं तुहिन हिमम् ।१८०।
नीहारं तत्करं विद्धि, मृगांङ्कं रोहिणीपतिम् ।

'मनोरमम्' यह पाठान्तर भी हो सकता है।

Scanned by CamScanner

अवश्याय, तुषार (पु), प्रालेय तुहिन, हिम (न.) और नीहार (पु.) ये ६ बर्फ के नाम हैं। बर्फ के नामों के अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे-अवश्यायकर (पु.) आदि। तथा मृगांक और रोहिणीपति (पु.) ये २ भी चन्द्रमा के नाम हैं।

गुप्तचर, इन्द्र और सत्य के नाम

चारोऽपसर्गः प्रणिधिः, निगूढपुरुषश्चरः ।१८१।
तद्वानुक्तः सहस्राक्षः, सत्यार्थे ऋतसूनृते ।

चार, × अपसर्ग, प्रणिधि, निगूढपुरुष और चर (पु.) ये ५ गुप्तचर के नाम हैं। गुप्तचर के नामों के अन्त में 'मतुप्' प्रत्यय जोड़ देने से +सहस्राक्ष। (पु.) आदि इन्द्र के नाम बन जाते हैं। जैसे चारवत् (पु.) आदि। ऋत और सूनृत (न.) ये दो सत्य के नाम हैं।

रम्भा, कदली और मोचा आदि शब्दों के अर्थ

अत्यन्ताय चिरायेति, प्राह्णेऽकस्माद्बलादिति।१८२।
प्रायेणेति कृते चेति, विभक्ति-प्रतिरूपकं ।
रम्भास्त्रीकदली चिह्नं, मोचा सारतरुश्च सा।१८३।

* अत्यन्ताय (अ.) यह बहुत का नाम है। चिराय (अ.) यह बहुत काल का नाम है। प्राह्णे (अ.) यह प्रातःकाल का नाम है। अकस्मात् (अ.) यह अचानक का नाम है। बलाद् (अ.) यह जबरदस्ती का नाम है।

प्रायेण—यह बहुधा अर्थात् प्रायः का नाम है कृते यह

+समासान्तप्रयोगः ? ×अवसर्पः इति पाठान्तरम्।

* सदृशं त्रिषु लिंगेषु, सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु, यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

Scanned by CamScanner

'के लिये' का नाम है। ये सातों विभक्तिप्रतिरूपक (विभक्ति के समान मालूम होने वाले) अव्यय हैं।

रम्भा (स्त्री)—यह स्त्री और कदली अर्थात् केले के वृक्ष नाम है। कदली (स्त्री.)—यह चिह्न अर्थात् ध्वजा और मोचा अर्थात् सेमर और केले के वृक्ष का नाम हैं तथा मोचा (स्त्री.)—यह सारतरु अर्थात् सेमर के वृक्ष और कदली अर्थात् केले के वृक्ष का नाम है।

× भावार्थ—रम्भा, कदली और मोचा ये ३ केले के वृक्ष के नाम हैं। रम्भा—यह स्त्री, वेश्या और देवांगना का भी नाम है। कदली—यह ध्वजा और सेमर के वृक्ष का भी नाम है। चिह्न—यह ध्वजा का नाम है। मोचा—यह सेमर के वृक्ष का भी नाम है। सारतरु—यह भी सेमर के वृक्ष का नाम है।

बजने वाले बांस, गायन के शब्द आदि के नाम

कीचको ध्वनिमट्टेणुः, तालो गेयक्रमोद्भवः।
पुष्कर मुरजं पद्मं, हस्तिहस्ताग्रनामकम् ।१८४।

बजने वाले बांस को कीचक (पु.) कहते हैं। गाने की आवाज के क्रम (चढ़ा उतार) से जो शब्द निकलता है उसे ताल (पु.) कहते हैं। पुष्कर (न.) शब्द—मृदंग, कमल और हाथी की सूंड़ के अग्रभाग का नाम है।

गोल, ऊँच, नीच, लम्बे और मोटे के नाम

निस्तलं वर्तुलं वृत्तं, स्थपुटं विषमोन्नतम्।
दीर्घं प्रांशु विशालं च, बहुलं पृथुलं पृथु ।१८५।

निस्तल, वर्तुल और वृत्त (त्रि.) ये ३ गोल के नाम हैं। 'ऊंचे-नीचे' विषम-स्थल का स्थपुट (त्रि.) कहते हैं। दीर्घ,

× यह इस पद्य के पांचवें, छटवें चरण का भावार्थ है।

प्रांशु और विशाल (त्रि.) ये तीन लम्बे या बड़े के नाम हैं। बहुल, पृथुल और पृथु ये ३ बहुल के नाम हैं।

घोर और देर के नाम

उल्बणं दारुणं तिग्मं, घोरं तीव्रोग्रमुत्कटम्।
शीतलं तिमिरं याप्यं, मन्दं विद्धि विलम्बितम् ।१८६

उल्बण, दारुण, तिग्म, घोर, तीव्र, उग्र और उत्कट (त्रि.) ये ७ घोर के नाम हैं। शीतल, तिमिर, याप्य, मन्द और विलम्बित (न.) ये पांच देर के नाम हैं।

मित्रता के नाम

सौहार्दं सौहृदं हार्दं, सौहृद्यं सख्य–सौरभम्।
मैत्री मैत्रेयिकाजर्यं, साहाय्यं संगतं मतम् ।१८७।

सौहार्द, सौहृद, हार्द, सौहृद्य, सख्य, सौरभ (न.), मैत्री (स्त्री.), मैत्रेयिक, अजर्य, साहाय्य और संगत (न.) ये ११ मित्रता के नाम हैं।

स्वभाव, अभ्यास और बारम्बार के नाम

स्वभावः प्रकृतिः शीलं, निसर्गो विस्रसा निजः।
योग्या गुणनिकाऽभ्यासः, स्यादभीक्ष्णं मुहुर्मुहुः १८८।

स्वभाव (पु.), प्रकृति (स्त्री.), शील (न.), निसर्ग (पु.), बिस्रसा (अ.) और निज (पु.) ये ६ स्वभाव के नाम हैं। योग्या, गुणनिका (स्त्री.) और अभ्यास (पु.) ये ३ अभ्यास के नाम हैं। अभीक्ष्णम् और मुहुर्मुहुः (अ.) ये २ बारम्बार (पुनः पुनः) के मान हैं।

Scanned by CamScanner

व्यर्थ और कष्ट के नाम

मृषालीकं मुधा मोघं, विफलं वितथं वृथा ।
विधुरं व्यसनं कष्टं, कृच्छ्रं गहनमुद्धरेत् ।१८९।

मृषा (अ.), अलीक (न.), मुधा (अ.) मोघ, विफल, वितथ, (न.), और वृथा (अ.) ये ७ व्यर्थ के नाम हैं : विधुर, व्यसन, कष्ट, कृच्छ्र और गहन (न.) ये ५ कष्ट के नाम हैं। अपना और अन्य का दुःख दूर करना चाहिये।

सम्पूर्ण और टुकड़े के नाम

समस्तं सकलं सर्वं, कृत्स्नं विश्वं तथाखिलम् ।
शकलं विकलं खण्डं, शल्कं लेशं लवं विदुः ।१९०।

समस्त, सकल, सर्व, कृत्स्न, विश्व और अखिल (त्रि.) ये ६ सम्पूर्ण के नाम हैं। शकल, विकल (न.), खण्ड (पु.), शल्क (न.), लेश और लव (पु.) ये ६ टुकड़े के नाम हैं।

लड़ाई, निन्दा, कपट, और खून के नाम

मर्मकोशं च कलहं, परिवादं छलं नयेत् ।
शोणितं लोहितं रक्तं, रुधिरं + क्षतजासृजम्।१९१।

मर्मकोश और कलह (पु.) ये दो लड़ाई के नाम हैं। × परिवाद, परीवाद (पु) और छल (न.) ये ३ कपट के नाम हैं। शोणित, लोहित, रक्त, रुधिर, क्षतज और असृज् (न.) ये ये ६ खून (लोहू) के नाम हैं।

+ 'द्वन्दाच्चुदषाहान्तात्समाहारे' इस सूत्र से यहां टच्प्रत्यय हो गया है। × परिवादः निन्दा प्रयोजनं यस्य तत्परिवादम्।

Scanned by CamScanner

हमेशा, वर और विवाह के नाम

सततानारताजस्रा—न्वहं कन्यापति वरः ।
उद्वाहः परिणयनं, विवाहश्च निवेशनम् ।१९२।

* सततम्, अनारतम्, अजस्रम् और अन्वहम्, (अव्यय) ये चार हमेशा के नाम हैं। वर (पु) यह कन्या के पति (दामाद) का नाम है। उद्वाह (पु.), परिणयन (न.), परिणय, विवाह (पु.) और निवेशन (न.) ये ५ विवाह के नाम हैं।

छिद्र, गड्ढे और नरक के नाम

शुषिरं विवरं रन्ध्रं, छिद्रं गर्तं च गह्वरम् ।
श्वभ्रं रस्यं च पालालं, नरकं यान्त्यमेधसः ।१९३।

शुषिर, सुषिर, विवर, रन्ध्र, और छिद्र ये ५ छिद्र के नाम हैं। गर्त और गह्वर (न.) ये गड्ढे के नाम हैं। श्वभ्र, रस्य, पाताल और नरक (न.) ये ४ नरक के नाम हैं। नरकों में अज्ञानी जीव जाते हैं।

बहुत के नाम

अदभ्रं भूरि भूयिष्ठं, बंहिष्ठं बहुलं बहु ।
प्रचुरं नैकमत्यन्तं +प्रभूतं प्राज्यपुष्कले ।१९४।

अदभ्र, भूरि, भूयिष्ठ, बंहिष्ठ, बहुल, बहु, प्रचुर, × नैक, अत्यन्त, प्रभूत, प्राज्य और पुष्कल (न.) ये १२ बहुत के नाम हैं।

संसार के नाम

भावो भवश्च संसारः, संसरणं च संसृतिः ।
तत्त्वज्ञश्चतुरो धीरः, त्यजेज्जन्माजवञ्जवम् ।१९५।

---

* 'एकवचनमुत्सर्गतः क्रियते' इस न्याय से एक वचन लगाकर सततम् इत्यादि प्रयोग करना चाहिये। + प्राभूतमिति पाठान्तरम्।
× 'सह सुपा' इति-सूत्रेण नैकशब्दे नशब्देन सह समासः।

Scanned by CamScanner

भाव, भव, संसार (पु.), संसरण (न.) संसृति (स्त्री.), +जन्मन्, आजव, × जव और आजवञ्जव (न.) ये ६ संसार के नाम हैं। जो तत्त्वज्ञ, चतुर तथा धीर हैं, वे इस संसार को असार या दुःखदायक जान कर शीघ्र ही छोड़ देते हैं।

प्रतापी और शूरवीर के नाम

ओजस्व्यूर्जस्वी तेजस्वी, तरस्वी च मनस्व्यपि।
*भास्वरो भासुरः शूरः, प्रवीरः सुभटो मतः ।१९६।

ओजस्विन्, ऊर्जस्विन्, तेजस्विन् तरस्विन् और मनस्विन् (पु.) ये ५ प्रतापी पुरुष के नाम हैं। * भास्वर, भासुर, शूर, सूर, प्रवीर और सुभट (पु.) ये ५ शूरवीर के नाम हैं।

स्वीकार और व्याना का नाम

उररीकृतप्यूरी — कृतमंगीकृतं तथा।
अतुङ्कारोऽभ्युपगमे, सत्यङ्कारः पणार्पणे ।१९७।

उररीकृत, ऊरीकृत, अंगीकृत (न.) और अस्तुंकार (पु.) जो ४ स्वीकार के नाम हैं। बाजार में खरीद पक्की करने के लिये जो साई (व्याना) देकर प्रतिज्ञा की जाती है उसे सत्यंकार (पु.) कहते हैं।

बखतर, अंगरखा और छत्र के नाम

तनुत्रं वर्म कवचम्, आवृति र्वाणवारणम्।
कूर्पासं कञ्चुकं छत्रम्, आतपत्रोष्णवारणम् ।१९८।

+ जन्मन्-शब्दस्य संसारार्थः श्री अमृतचन्द्राचार्येण स्वग्रन्थे पुरुषार्थसिद्ध्युपाये अनेकवारं कृतः।

तनुत्र, वर्मन्, कवच (न.), आवृत्ति (स्त्री.)और वाणवारण (न.) ये ५ बखतर (कवच) के नाम हैं। कूर्पास और कञ्चुक (न.) ये २ अंगरखे (कुरते) के नाम हैं। छत्र, आतपत्र और उष्णवारण (न.) ये ३ छत्र के नाम हैं।

बाल और चोटी के नाम

केशं शिरोरुहं वालं, कचं चिकुरमीहयेत् ।
चूडापाशं च धम्मिल्लं, कबरीं केशबन्धनम् ।१९९।

केश, शिरोरुह, वाल, कच और चिकुर (पु.) ये ५ बालों के नाम हैं। चूडापाश, धम्मिल्ल (पु.), कबरी (स्त्री.) और केशबन्धन (न.) ये चार चोटी के नाम हैं।

कल्याण (मंगल) के नाम

क्षेमं कल्याणमभयं, श्रेयो भद्रं च मङ्गलम् ।
भावुकं, भविकं भव्यं, कुशलं च शिवं विदुः ।२००।

क्षेम, कल्याण, अभय, श्रेयस्, भद्र, मंगल, भावुक, भविक, भव्य, कुशल और शिव (न.) ये ११ कल्याण के नाम हैं।

ग्रन्थकार का स्वकीय लाघवप्रकाशन

वक्ता वाचस्पति र्यत्र, श्रोता शक्रस्तथापि तौ ।
शब्दपारायणस्यान्तं, न गतौ तत्र के वयम् ।२०१।

अर्थ—जैसे समुद्र अथाह होता है, उसी प्रकार शब्दों का समूह भी अगम है, ऐसी दशा में जब कि वक्ता बृहस्पति

---

* पारायण=पाठ की पूर्णता। अमरप्रकाश पृष्ठ १८२।

Scanned by CamScanner

और श्रोता इन्द्र भी उसका पार नहीं पा सके, तब हमारी तो गणना ही क्या है ।२०१।

तथापि किञ्चित् कस्मैचित्, प्रतिबोधाय सूचितम् ।
बोधयेत्किंयदुक्तिज्ञो, मार्गज्ञः सह याति किम् ।२०२।

अर्थ--जैसे रास्ता बताने वाला मनुष्य स्वयं पथिक के साथ नहीं जाता, केवल सुगम मार्ग बतला देता है, उसी प्रकार वचन के जानकार चतुर जनों को इशारा मात्र पर्याप्त होता है। इसलिये ऐसे लोगों को समझाने के लिये कतिपय शब्दों के कुछ-कुछ नामों का ही यहां निरूपण किया है। तो भी वे थोड़े से बहुत जान लेवेंगे ।२०२।

शास्त्रीय अपूर्व तीन रत्न

प्रमाणमकलङ्कस्य, पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्विसन्धानकवेः काव्यं, रत्नत्रयमपश्चिमम् ।२०३।

अकलंक स्वामी का प्रमाण (न्याय) शास्त्र, पूज्यपाद (गुणनन्दी) स्वामी का लक्षण (व्याकरण) शास्त्र और द्विसन्धान—काव्य से कर्त्ता धनञ्जय कवि का काव्यशास्त्र (द्विसन्धान) ये तीनों अपूर्व ही रत्न हैं ।२०३।

ग्रन्थकार का नाम और श्लोकों का प्रमाण

कवे र्धनञ्जयस्येयं, सत्कवीनां शिरोमणेः ।
प्रमाणं नाम-मालेति, श्लोकानाञ्च शतद्वयम् ।२०४।

यह नाममाला; उद्भट कवियों में शिरोमणि कविवर धनञ्जय की बनाई हुई है, यह सर्वाभिमत बात है। और इस ग्रन्थ के नामाभिधायक (नामों के बताने वाले) श्लोक २०० दो सौ हैं ।२०४।

Scanned by CamScanner

ब्रह्माणं समुपेत्य वेद-निनद-व्याजात्तुषाराचल-
स्थान-स्थावरमीश्वरं सुरनदी-व्याजात्तया केशवम्।
अप्यम्भोनिधि-शायिनं जलनिधि-ध्यानापदेशादहो,
फूत्कुर्वन्तिधनञ्जयस्यचभिया,शब्दाःसमुत्पीडिताः।२०५

अह आश्चर्य की बात है कि धनञ्जय कवि के भय से पीड़ित होकर शब्दरूप वेदध्वनि के बहाने से ब्रह्मा के पास, गंगा के बहाने से हिमगिरि (हिमालय) पर रहने वाले महादेव के पास तथा समुद्र के शब्दों के बहाने से विष्णु के पास जाकर अपना दुःख प्रगट करते हैं।

इत्यादर्शटीकोपेता धनञ्जयकविविरचिता

नाममाला समाप्ता

॥ समाप्त ॥

Scanned by CamScanner

॥ ॐ ॥

श्रीधनञ्जय-कवि-विरचिता

अनेकार्थ-नाममाला

(आदर्श-टीका-टिप्पणी सहिता)

गम्भीरं रुचिरं चित्रं, विस्तीर्णार्थप्रकाशकम् ।
शाब्दं मनाक् प्रवक्ष्यामि, कवीनां हितकाम्यया ।१।

मैं धनञ्जय कवि अन्य कवियों के हित की चाह से एक-एक शब्द के अनेक-अनेक अर्थों को बतलाने वाले, गम्भीर, मनोहर और विचित्र शब्दसमूह को लिखता हूं। १।

अर्हत्पिनाकिनौ शम्भू, जिनावर्हत्तथागतौ ।
वेदसूर्यौ विवस्वन्तौ, विष्णुरुद्रौ वृषाकपी ।२।

'शम्भु' (पु.) शब्द—अर्हत् (जिनेन्द्र और पिनाकिन् (महादेव) का वाचक है। 'जिन' (पु.) शब्द-अर्हत् और तथागत (बुद्ध) का वाचक है। 'विवस्वत्' (पु.) शब्द—वेद और सूर्य का वाचक है। तथा 'वृषाकपि' (पु.) शब्द विष्णु और रुद्र का वाचक है।२।

वैकुण्ठाविन्द्रगोविन्दौ अनन्तौ शेषशार्ङ्गिणौ ।
जीमूतौ+ करिकुत्कीलौ, पर्जन्यो शक्रवारिदौ ।३।

+करी=हस्ती, कुत्कीलः=पर्वत, यह भी अर्थ है। तदुक्तम् मेदिनीकोशे—'जीमूतोऽद्रौ घृतकरे, पर्वते च पयोधरे।' कुत्कीलशब्द भी यशस्तिलकचम्पू में पर्वतवाचक आया है।

Scanned by CamScanner

वैकुण्ठ शब्द इन्द्र और विष्णु का अनन्त शब्द शेषनाग और विष्णु का, जीमूत शब्द करिकुन् (मेघ) और कील (कीली) का अथवा करी अर्थात् हाथी और कुत्कील (पर्वत) का तथा पर्जन्य शब्द इन्द्र और वारिद अर्थात् मेघ का वाचक है। ये सभी शब्द पुलिंग हैं।३।

वनमम्भसि कान्तारे, भुवनं विष्टपेऽर्णसि।
घृतं सर्पिषि पानीये, विषं हालाहले जले।४।

(१) वनशब्द जल और जंगल का। (२) भुवनशब्द-संसार और जल का। (३) घृतशब्द-घी और जल का तथा (४) विषशब्द हालाहल और जल का नाम है। ये सभी शब्द (नपुंसकलिंग हैं।४।

तल्पं दारेषु शय्यायां, ज्योतिश्चक्षुषि तारके।
धवले सुन्दरे रामो, वामो वक्रे मनोहरे।५।

तल्प (न.) शब्द स्त्री और शय्या का, ज्योतिष् (न.) शब्द नेत्र और आंख की पुतली, राम (पु.) शब्द उज्वल और सुन्दर का, वाम (पु.) शब्द टेढ़े और मनोहर का नाम है।

नक्षत्रे मन्दिरे धिष्ण्यं, वसने गगनेऽम्बरम्।
परिधौ पादपे सालः, सिन्धुः स्रोतसि योषिति।६।

विष्ण्य (न.) शब्द नक्षत्र और मकान का, अम्बर शब्द वसन=वस्त्र और आकाश का, साल (पु. न.) शब्द काठ और वृक्ष का, सिन्धु शब्द स्रोतस्=नदी और स्त्री का नाम है।

सारसः शकुनौ धूर्ते, केतनं दीधितौ ध्वजे।
मयूखः कीलके दीप्तौ, पतंगः शलभे रवौ।७।

Scanned by CamScanner

सारस (पु.) शब्द पक्षी और धूर्त का नाम है । केतन (न.) शब्द किरण और ध्वजा का वाचक है। मयूख (पु.) शब्द कीलक (खूंटी) और दीप्ति=किरण का नाम है। पतंग (पु.) शब्द शलभ=पतंग और सूर्य का वाचक है। ७ ॥

अञ्जनः कज्जले नागे, सारंगः पृषते गजे ।
सरलः प्रगुणे वृक्षे, पुन्नागः सज्जने तरौ ।८।

अञ्जन (पु न.) शब्द कज्जल और हाथी का वाचक है। सारंग (पु.) शब्द पृषत=हरिण और हाथी का नाम है। सरल (पु.) शब्द प्रगुण=सीधे और वृक्ष का वाचक है। पुन्नाग (पु.) शब्द सज्जन=सज्जन और वृक्ष का नाम है ॥ ८ ॥

पाञ्चजन्यो ऽनले शंखे, कम्बुः शंखे मतंगजे ।
कस्वरो द्युभवे द्युम्ने, स्यन्दनं शकटेऽम्बुनि ।९।

पाञ्चजन्य (पु न.) शब्द अग्नि और शंख का वाचक है। कम्बु (पु.) शब्द—शंख और हाथी का नाम है । कस्वर (पु.) शब्द- द्युभव=देव और द्युम्न=धन का वाचक है। स्यन्दन (न.) शब्द-- गाड़ी, जल और रथ का नाम है ।

अद्रि गिरिवनस्पत्योः, शिखरी तरुभूध्रयोः ।
राजा चन्द्रमहीपत्योः, द्विजो दशनविप्रयोः ।१०।

अद्रि (पु.) शब्द—पर्वत और वृक्ष का वाचक है। शिखरिन् (पु) शब्द—वृक्ष और पहाड़ का नाम है। राजन् (पु.) शब्द चन्द्र और राजा का वाचक है। द्विज शब्द (पु.) दशन=दांत और विप्र=ब्राह्मण का नाम है।

मोचामरस्त्रियोः रम्भा, कदली ध्वजमोचयोः ।
अशोकः सुमनस्तर्वोः, सुमनाः सुरपुष्पयोः ।११।

Scanned by CamScanner

रम्भा (स्त्री.) शब्द—मोचा=केले और अमरस्त्री=देवांगना का नाम है। वदली (स्त्री.) शब्द—ध्वजा और मोचा का वाचक है। अशोक (पु.) शब्द—सुमनस्=पुष्प और अशोक वृक्ष का नाम है। सुमनस् (पु.) शब्द—सुर=देव और पुष्प का नाम है।

मुक्तारजतयोस्तारः, भूरि भूयः—सुवर्णयोः।
पानीयदुग्धयोः क्षीरं, पयः सलिलदुग्धयोः।१२।

तार पु.) शब्द—मुक्ता (मोती) और रजत (चांदी) का, भूरि (न.) शब्द भूयस् (बाहुल्य) और सुवर्ण का नाम है। क्षीर (न.) शब्द पानी और दुग्ध का वाचक है। पयस् (न.) शब्द—सलिल (जल) औ दुग्ध का नाम है।

कालप्रकर्षयोः काष्ठा, कोटिः संख्याप्रकर्षयोः।
रन्ध्रसंश्लेषयोः सन्धिः, सिन्धुर्नदसमुद्रयोः।१३।

×काष्ठा (स्त्री.) शब्द—काल और प्रकर्ष (बड़प्पन) का वाचक है। कोटि (स्त्री.) शब्द—संख्या और प्रकर्ष का नाम है। सन्धि (पु.) शब्द रन्ध्र (छिद्र) और मिलाप का वाचक है। सिन्धु (स्त्री.) शब्द नदी और समुद्र का नाम है।

निषेधदुःखयो र्बाधा, व्यामोहो मूर्खमौढ्ययोः।
कोपीनाकार्ययो गुह्यं, कीलालं रुधिराम्भसोः।१४।

बाधा (स्त्री.) शब्द—निषेध और दुःख का नाम है। व्यामोह (पु.) शब्द मूर्ख और मूर्खता का वाचक है। गुह्य (न.)

×'अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा०:' इत्यमरः। १८ निमेष की एक काष्ठा होती है। * कोटिद्वयम्=दो करोड़।

Scanned by CamScanner

शब्द - कौपीन (लंगोटी) और अकार्य (पाप) का नाम है। कीलाल (न) शब्द रुधिर और जल का नाम है।१४।

मूल्यसत्कारयोरर्घो, जात्यः श्रेष्ठ-कुलीनयोः।
मेघवत्सरयोरब्दः, तार्क्ष्यो हयगरुन्मतोः ।१५।

अर्घ (पु) शब्द मूल्य और सत्कार का वाचक है। जात्य (पु.) शब्द—श्रेष्ठ और कुलीन का नाम है। अब्द (पु) शब्द - मेघ और वत्सर (वर्ष) का वाचक है। तार्क्ष्य (पु) शब्द—हय (घोडा) और गरुत्मत् (गरुड़ का नाम है।

स्तब्धताम्थूणयोः स्तम्भः, चर्चा चिन्ता-वितर्कयोः।
हरकीलकयोः स्थाणुः, स्वैरः स्वच्छन्दमन्दयोः ।१६

स्तम्भ (पु) शब्द— स्तब्धता (धीरज) और स्थूण (थम्भा) का वाचक है। चर्चा (स्त्री.) शब्द चिन्ता और वितर्क (विचार) का नाम है। स्थाणु (पु.) शब्द—हर (महादेव) और कीलक (कील) का वाचक है। स्वैर (पु.) शब्द— स्वच्छन्द=स्वतन्त्र और मन्द=धीरे या सुस्त का नाम है।१६।

शङ्कुः संकीर्णविवरे, पलालाग्नौ च कीलके।
संख्यायां काननोद्भूते, वह्नौ दावो दवोऽपि च ।१७।

शंकु (पु) शब्द संकीर्णविवर=छोटा छिद्र; पलालाग्नि=भूसे की आग; कीलक और संख्या का वाचक है। दाव और दव (पु) ये दो शब्द जंगल में लगी हुई अग्नि अर्थात दमार के नाम है।१७।

कीनाशः कृषणे भृत्ये, कृतान्ते पिशिताशिनि।
तथा पुण्यजनान् प्राहुः, सज्जनान् राक्षसानपि ।१८।

Scanned by CamScanner

कीनाश (पु) शब्द—कृपण=कंजूस, भृत्य=नौकर, कृतान्त =यम; पिशिताशिन्=मांसभक्षी; पुण्यजन=पुण्यात्मा पुरुष, सज्जन और राक्षस इन ७ का नाम है।१८।

विरोचनो रवौ चन्द्रे, दनुसूनौ हुतासवै ।
हँसो नारायणे ब्रध्ने, यतावश्वे सितच्छदे ।१९।

विरोचन (पु.) शब्द—रवि, चन्द, दनुसून=प्रद्युम्न और हुताशन=अग्नि इन चार का नाम है। हंस (पु.) शब्द नारायण; ब्रध्न=सूर्य; यति=साधु, अश्व=घोड़ा और सितच्छद=हंसपक्षी इन ५ का नाम है।१९।

सोमश्चन्द्रोऽमृतं * सोमः, सोमो राजा युगादिभूः ।
सोमः प्रतानिनीभेदः, सोमपोऽगस्त्य-दिक्पति ।२०।

सोम (पु.) शब्द के—चन्द्रमा, अमृत, राजा, युगादिभू= ब्रह्मा, लता विशेष तथा अगस्त्यदिक्पति=वरुण ये ६ अर्थ है।

×अजो विधिरजो विष्णुः,अजः शम्भुरजस्तमः ।
अजस्त्रैवार्षिको व्रीहिः, अजो रामपितामहः ।२१।

अज (पु.) शब्द - विधि=ब्रह्मा, विष्णु, शम्भु=महादेव, अन्धकार और तीन वर्ष की पुरानी धान तथा रामचन्द्र के पितामह अर्थात् बाबा (पिता के पिता) का नाम है।२१।

---

* सोमश्चन्द्रे ऽमृते सोमः, सोमो राज्ञि युगादिजे ।
सोमः प्रतानिनीभेदे, सोमः पौलस्त्यदिक्पतौ ।२०।

× अजो विधावजो विष्णौ, अजः शम्भावजस्तमः ।
अजस्त्रैवार्षिके व्रीहौ, अजो रामपितामहः ।२१।
इति पाठान्तरम् । अमरेऽप्येवमाह ।

Scanned by CamScanner

शुद्धेऽनुपहते, वह्नौ, ब्राह्मणे सचिवोत्तमे ।
आषाढ़ेऽध्यात्मसंवित्तौ, ब्रह्मचर्ये शुचि र्मतः ।२२।

शुचि (त्रि.) शब्द के शुद्ध, अनुपहत, वह्नि, ब्राह्मण, उत्तम मन्त्री, आषाढ़ मास, अध्यात्मज्ञान और ब्रह्मचर्य ये आठ अर्थ हैं ।

अर्थोऽभिधेयरै — वस्तु—प्रयोजन — निवृत्तिषु ।
भावः पदार्थचेष्टात्म — सत्ताभिप्रायजन्मसु ।२३।

अर्थ (पु.) शब्द के—पांच अर्थ हैं। अभिधेय=वाच्य, रै= धन, वस्तु, प्रयोजन और निवृत्ति । भाव (पु.) शब्द के पदार्थ, चेष्टा, आत्मा, सत्ता, अभिप्राय और जन्म ये ६ अर्थ हैं ।

प्रायो भूमोपमाऽतर्क्य—प्रभृत्यन्न—निवृत्तिषु ।
अन्तः पदार्थसामीप्य — धर्मसत्त्वव्यतीतिषु ।२४।

प्रायः और प्रायस् (अ.) शब्द के—भूमन्=बाहुल्य, उपमा, =तुल्य, अतर्क्य, प्रभृति=आदि और अन्ननिवृत्ति (अन्नत्याग) ये ५ अर्थ हैं । अन्त (पु.) शब्द के पदार्थ, सामीप्य, धर्म, सत्त्व=बल और व्यतीति=बीतना ये ५ अर्थ हैं ।२४।

अक्षो द्यूते वरूथांगे, नयनादौ विभीतके ।
सारः श्रेष्ठे बले वित्ते, केशे जलचरे स्थिरे ।२५।

अक्ष (पु.) शब्द के जुआ, वरथांग=रथ के चक्र का अवयव नेत्र, विभीतक=भयानक और आदि पद से गाड़ी का धुरा और व्यवहार ये ६ अर्थ हैं । सार (त्रि.) शब्द के—श्रेष्ठ, बल, वित्त= धन, केश, जलचर और स्थिर से छह अर्थ हैं ।२५।

Scanned by CamScanner

वाचि वारि पशौ भूमौ, दिशि लोम्नि पवौ दिवि ।
विशिखे दीधितौ दृष्टौ, एकादशसु गौ मतः ।२६।

गो (पु. स्त्री.) शब्द के वाच्=बोली, वार्=पानी, पशु, भूमि, दिशा, लोमन्=राम, पवि=वज्र, दिव्=आकाश, विशिख=बाण, किरण और दृष्टि ये ११ अर्थ हैं ।२६।

चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ, वासवे दर्दुरे हये ।
मृगेन्द्रे वानरे वायौ, दशस्वपि हरिः स्मृतः ।२७।

हरि (पु.) शब्द के—चन्द्र, सूर्य, यम, विष्णु, इन्द्र, दर्दुर—मेंढक, घोड़ा, सिंह, बन्दर और वायु ये १० अर्थ हैं ।२७।

पद्मे करिकर—प्रान्ते, व्योम्नि खड्गफले गदे ।
वाद्यभाण्डमुखे तीर्थे, जले पुष्करमष्टसु ।२८।

पुष्कर (न.) शब्द के कमल, हाथी की सूंड़ का अग्रभाग, व्योमन्=आकाश, तलवार की मूंठ, गदा, वाद्यभाण्डमुख=बाजे का मुख, तीर्थ-विशेष और जल ये ८ अर्थ हैं ।

शृंगारादौ कषायादौ, घृतादौ च विषे जले ।
निर्यासे पारदे रागे, वीर्येऽपि रस इष्यते ।२९।

शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त इन काव्यगत रसों में, कषाय, तिक्त, कटुक, आम्ल और मिष्ट इन ५ पुद्गल के गुणों में, घी, नमक, दूध, दही, तेल और मिठाई इन ६ भोजन के स्वादों में, विष, जल, निर्यास=काढ़ा या गोंद, पारद=पारा, राग और वीर्य में रस (पु) शब्द का प्रयोग होता है ।२९।

Scanned by CamScanner

तीर्थं प्रवचने पात्रे, लब्धाम्नाये विदाम्वरे ।
पुण्यारण्ये जलोत्तारे, महासत्त्वे महामुनौ ।३०।

तीर्थ (न. पु.) शब्द के—प्रवचन=शास्त्र, पात्र=बर्तन, लब्धाम्नाय=धर्मतीर्थ प्रवर्तक, विदाम्वर=पण्डित, पुण्यारण्य=तीर्थस्थान, जलोत्तार=सीढ़ी, महासत्त्व और महामुनि ये ७ सात अर्थ हैं ।३०।

धातुः पञ्चसु लोहेषु, शरीरस्य रसादिषु ।
पृथिव्यादि—चतुष्के, च स्वभावे प्रकृतावपि ।३१।

धातु (पु.) शब्द के—१ धातु- चांदी; सोना, लोहा वगैरह, २ शरीर के रस रक्त, मांस, मज्जा, हड्डी और वीर्य आदि, ३ भूतचतुष्टय—पृथ्वी, अग्नि, तेज, वायु, ४ स्वभाव, ५ प्रकृति ये ५ अर्थ हैं ।३१।

प्रधानं शृंगलांगूल—भूषा—पुण्ड्र—प्रभावना ।
ध्वजलक्ष्मतुरंगेषु, ललामो नवसु स्मृतः ।३२।

ललाम (पु.) शब्द के—१ प्रधान, शृंग=सींग, लांगूल=पूंछ, ४ भूषा=भूषण, ५ पुण्ड्र=इक्षु, ६ प्रभावना (महिमा), ७ ध्वजा, ८ चिह्न, ९ तुरंग=घोड़ा ये ९ अर्थ हैं ।३२।

आकृतावक्षरे रूपे, ब्राह्मणादिषु जातिषु ।
माल्यानुलेपने चैव, वर्णः षट्सु निगद्यते ।३३।

वर्ण शब्द के १ आकृति, २ अक्षर—(अ, आ आदि), ३ रूप, ४ जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), ५ माल्य=माला और ६ अनुलेपन=उबटन ये छह अर्थ हैं ।३३।

Scanned by CamScanner

अकारादावुदात्तादौ, षड्जादौ निस्वने स्वरः ।
संकेताचारसिद्धान्त – कालेषु समयः स्मृतः ।३४।

स्वर (पु.) शब्द के १ अकारादि—अ, आ, आदि, २ उदात्तादि—उदात्त, अनुदात्त और स्वरित, ३ षड्जादि=निषाद; ऋषभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पञ्चिम तथा ४ निस्वन =आवाज ये ४ अर्थ हैं। समय (पु) शब्द के १ संकेत, आचार, सिद्धान्त और काल ये ४ अर्थ हैं ।३४।

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते, सैन्ये तन्तौ परिच्छदे ।
सत्यमोजसि सत्ताया–मुत्साहे स्थेम्नि जन्तुषु ।३५।

तन्त्र (न.) शब्द के—१ प्रधान, २ सिद्धान्त, ३ सेना, ४ तन्तु=धागा और ५ परिच्छेद=परिग्रह ये ५ अर्थ हैं। सत्य (न.) शब्द के—१ ओजस्=तेज, २ सत्ता=अस्तित्व, ३ उत्साह, ४ स्थेमन्=स्थिरता और ५ जन्तु ये पांच अर्थ हैं ।३५।

रूपादौ तन्तुषु ज्यायाम्, सप्रधाने नये गुणः ।
ज्ञानचारित्रमोक्षात्म – श्रुतिषु ब्रह्मवाग्वरा ।३६।

गुण शब्द का १ रूपादि=रूप, रस, गन्ध और स्पर्श, २ तन्तु=धागा, ३, ज्या=धनुष की डोरी, ४ अप्रधान=गौण और ५ नय इन ५ अर्थों में प्रयोग होता है। तथा ब्रह्मवाच् (स्त्री.) शब्द का १ ज्ञान, २ चारित्र, ३ मोक्ष, ४ आत्मा और ५ श्रुति=वेद इन पांच अर्थों में प्रयोग होता है ।३६।

अवकाशे क्षणे वस्त्रे, बहिर्योगे व्यतिक्रमे ।
मध्येऽन्तःकरणे रन्ध्रे, विशेषे विरहेऽन्तरम् ।३७।

अन्तर (न.) शब्द का प्रयोग—१ अवकाश=छुट्टी, २ क्षण, ३ वस्त्र, ४ बहिर्योग, ५ व्यतिक्रम=उल्लंघन, ६ मध्य, ७ अन्तः

करण=मन, ८ छिद्र, ९ विषय और १० विरह इन १० अर्थों में होता है ।३७।

हेतौ निदर्शने प्रश्ने, श्रुतौ कर्म-समाप्तौ ।
आनन्तर्येऽधिकारार्थे, मंगले चाथ इष्यते ।३८।

अथ—(अथ्यय) शब्द का—हेतु, निदर्शन=दृष्टान्त, प्रश्न, श्रुति, किसी पुस्तक का प्रारम्भ, आनन्तर्य=अव्यवधान, अधिकार और मंगल इन आठ अर्थों में प्रयोग होता है ।३८।

हेतावेवं - प्रकारादौ, व्यवच्छेदे विपर्यये ।
प्रादुर्भावे समाप्तौ च, इतिशब्दः प्रकीर्तितः ।३९।

इति (अव्यय) शब्द का १ हेतु=कारण, २ एवं प्रकार=इस प्रकार, ३ व्यवच्छेद=व्यवधान, ४ विपर्यय=उलटा, ५ प्रादुर्भाव=उत्पत्ति और ६ समाप्ति इन ६ छह अर्थों में प्रयोग होता है ।३९।

धर्मो धनुष्यहिंसादौ, उत्पादादावये नये ।
द्रव्यं क्रियाश्रये वित्ते, जीवादौ दारुवैकृते ।४०।

धर्म शब्द का प्रयोग—१ धनुष, २ अहिंसादि=पांचों व्रत, ३ उत्पादादि=उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, ४ अय=भाग्य, और ५ नय इन पांच अर्थों में होता है । १ क्रियाश्रय=जिसमें कोई क्रिया की जाती है, २ वित्त=धन, ३ जीवादि=छह द्रव्य और ४ काठ से बनाये हुए मंगल द्रव्य आदि इन ४ अर्थों में द्रव्य (न.) शब्द का प्रयोग होता है ।४०।

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु, संसारिण्यपि पुद्गलः ।
अकर्म-कर्म-नोकर्म, जातिभेदेषु वर्गणा ।४१।

Scanned by CamScanner

पुद्गल (पु.) शब्द का प्रयोग—मूर्तिक पदार्थों और संसारी प्राणियों में होता है। वर्गणा (स्त्री.) शब्द का प्रयोग— १ अवर्ग—कर्म से भिन्न पुद्गलस्कन्ध, २ कर्म—ज्ञानावरणादि आठ कर्म, ३ नोकर्म—औदारिकादि तीन शरीर और छह पर्याप्ति तथा ४ जाति भेद इन चार अर्थों में होता है।४१।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशस. श्रियः।
वैराग्यस्यावबोधस्य, षण्णां भग इति स्मृतः।४२।

भग (पु.) शब्द के—ऐश्वर्य, सम्पूर्ण, वीर्य, यश, श्री, वैराग्य और अवबोध=ज्ञान ये ६ अर्थ हैं।४२।

प्राहुः कैवल्यमार्हन्त्ये, विविक्ते निर्वृतावपि।
लब्धिः केवलबोधादादौ,इष्टाप्तौ नियतौ श्रियाम्।४३।

कैवल्य (न.) शब्द—१ आर्हन्त्य=अरिहन्त भगवान् की अन्तरंग लक्ष्मी, २ विविक्त=एकान्त स्थान और ३ निर्वृत्ति=मोक्ष इन तीन का वाचक है। लब्धि (स्त्री.) शब्द का प्रयोग—१ केवलज्ञानादि=अनन्त चतुष्टय, २ इष्टाप्ति=इष्ट वस्तु की प्राप्ति, ३ नियति=कर्म और ४ श्री=लक्ष्मी या शोभा इन ४ अर्थों में होता है।४३।

अनेकान्ते च विधादौ, स्यान्निपातः शुभे क्वचित्।
दर्शनादौ मणौ रत्नं, भव्यः शस्ते प्रसेत्स्यति।४४।

स्यात् (अ.) शब्द का प्रयोग—अनेकान्त=अनेक धर्मात्मक स्याद्वाद, २ विधि और ३ शुभ इन तीन में होता है। रत्न (न.) शब्द का प्रयोग—सम्यग्दर्शनादि=रत्नत्रय और २ मणि इन अर्थों में होता है। भव्य (पु.) शब्द का प्रयोग—१ शस्त=प्रशंसा-योग्य वस्तु और २ प्रसेत्स्यत्—सम्यग्दृष्टि या कभी भी सम्यग्दर्शन पाने की योग्यता रखने वाला इन दो अर्थों में होता है।४४।

Scanned by CamScanner

परमात्मा जिने सिद्धे, पर – मेष्ठ्यर्हदादिषु ।
सिद्धः सिद्धनिषद्यायाम्, अर्हत्सिद्ध–श्रियामपि ।४५।

परमात्मन् (पु.) शब्द का प्रयोग—जिन =अर्हत्परमेष्ठी और सिद्धपरमेष्ठी इन दो अर्थों में होता है। परमेष्ठी शब्द का प्रयोग—अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु में होता है। सिद्ध शब्द का प्रयोग—सिद्धशिला में और अरिहन्त तथा सिद्धों की अन्तरंग लक्ष्मी इन तीन अर्थों में होता है।४५।

अर्हंत्सिद्धाविति द्वावप्यर्हत्सिद्धाभिधायिनौ ।
अर्हदादीनपि प्राहुः, शरणोत्तममंगलान् ।४६।

अर्हंत् और सिद्ध शब्द अरिहन्त तथा सिद्ध के वाचक हैं। अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवलिप्रणीत धर्म ये ४ लोक में शरण, उत्तम और मंगल कहे गये हैं।४६।

॥ इत्यनेकार्थनाममाला समाप्ता ॥

Scanned by CamScanner

नामनिर्धार के कुछ कारण

१—क्षणमात्र रहने से बिजली को क्षणरुचि, २—नीचे बहने के कारण नदी को निम्नगा, ३—जीभ से पीने के कारण कुत्ते को जिह्वाप, ४—मनु (कुलकर) से पैदा होने के कारण मनुष्यों को मनुज, ५—गर्मी का उत्पादक होने से सूर्य को तपन, ६—अकाल मौत रहित होने से देवों को अमर, ७—हजार नेत्र बनाने के कारण इन्द्र को सहस्राक्ष, ८—हमेशा बहने के कारण वायु को सदागति, ९—होम के द्रव्य को भस्म करने के कारण अग्नि को हुताशन।

१०—छह मुख वाला होने से कार्तिकेय को षण्मुख, ११—तीन नेत्र वाला होने से महादेव को त्रिनेत्र, १२—चार मुख वाला होने से ब्रह्मा को चतुर्मुख, १३—वसुदेव के सुपुत्र होने से कृष्ण को वासुदेव, १४—बड़े दांत होने ये हस्ती को दन्ती।

१५—तीर्थ (धर्म) के प्रवर्तक होने से भगवान् को तीर्थंकर १६—कर्मभूमि के प्रारम्भ में गज—कुम्भ द्वारा प्रजा का प्रधान जीवन-मार्ग-प्रदर्शक होने से आदिनाथ को प्रजापति, १७—सर्प से क्रीड़ा करने के कारण वर्धमान स्वामी को महावीर, १८—नग्न रहने के कारण जैनमुनि को दिगम्बर १९—बन्दर के चिह्न की ध्वजा होने के कारण अर्जुन को कपिध्वज, २०—जल्दी चलने के कारण ऊंट को शीघ्रगामुक, २१—पैरों बिना छाती मात्र से चलने के कारण सर्प को उरग, २२—मस्तक पर चन्द्रमा होने से महादेव को इन्दुमौलि।

२३—ग्राम में शेर जैसा काम देने से ग्रामशार्दूल, २४—सूंड से लेकर खाने के कारण शुंडाल और २५—इक्ष्वाकु वंश में पैदा होने के कारण आदीश्वर को ऐक्ष्वाकु कहते हैं। इसी प्रकार से और शब्दों के नामों के कारण जानना चाहिये। परन्तु इस प्रकार सभी रूढ़ (अव्युत्पन्न) नामों के कारण विदित हो सकना कठिन है।

Scanned by CamScanner

अनेकार्थवाचक शब्द सूची

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अक्ष	इन्द्रिय, पांसा	कोक	चकवा, भेड़िया
अग्रज	ज्येष्ठभ्राता, आदिनाथ	ख	आकाश, इन्द्रिय
अघम	कलंक, नीच	खग	पक्षी, विद्याधर, बाण
अभ्र	मेघ, आकाश	खलु	निषेध, दुःख
अम्बर	आकाश, वस्त्र	गहन	जंगल, दुःख
अर्जुन	सुवर्ण, अर्जुन, सफेद	गृह	स्त्री, मकान
अष्टापद	सुवर्ण, अष्टापद	गो	पृथ्वी, किरण, गाय, वाणी
इन	राजा, सूर्य	घन	मेघ, पत्थर
इन्दीवर	कमल, नीलकमल	चिह्न	ध्वजा, निशानी
इन्द्र	राजा, इन्द्र	छल	कपट, बेईमानी
उग्र	महादेव, तेज	जीर्ण	पुराना, दुबला
ओघ	समूह, कुल	तट	पर्वत का किनारा, तट
क	जल, ब्रह्मा, शिर	तिग्म	सूर्य, तेज
कर	किरण, हस्त	तिमिर	अन्धकार, देर
कर्ण	कान, इन्द्रिय	दिव्	आकाश, स्वर्ग
कलह	युद्ध, लड़ाई	दोषा	रात्रि, बाहु
कान्त	पति, सुन्दर	द्यो	आकाश, स्वर्ग
कामुकी	स्त्री, वेश्या	द्विरेफ	नदी, भ्रमर
काल	काल (मौत), कालारंग	धव	पति, मनुष्य
किञ्जल्क	पराग, कलंक	धामन्	किरण, मकान
कृतान्त	शास्त्र, काल	नग	पर्वत, वृक्ष
कृष्ण	विष्णु, कालारंग	नाग	हस्ती, सर्प

Scanned by CamScanner

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
निकाय = मकान, समूह		राजन् = राजा, चन्द्रमा	
नितम्ब = पर्वत का मध्य, कमर का पिछला भाग		रुधिर = केशर, खून	
		लोहित = लालरंग, खून	
निवेशन = विवाह, मकान		व्रज = समूह, पशुओं का समूह	
नीच = नीचाई और नीचजन		वन = जंगल, पानी	
पंक = कीचड़, कलंक		वयस् = पक्षी, अवस्था	
पतंग = सूर्य, पक्षी		वर = पति, दूलहा (वर)	
पद = पैर, छल, स्थान		विभावसु = किरण, अग्नि	
पयस् = जल, दूध		विभ्रम = लहर, कटाक्ष	
पाताल = नरक, बड़वानल		शर = पानी, बाण	
पाद = किरण, पैर		शिखिन् = अग्नि, मयूर	
पुष्कर = कमल, मृदंग, शुण्डाग्र		शिलीमुख = बाण, भ्रमर	
पुष्कल = स्पष्ट, बहुत		शिव = महादेव, कल्याण	
प्रजापति = ब्रह्मा, आदिनाथ		शृंगिन् = पर्वत, पशु	
बहुल = मोटा, बहुत		सन्तति = कुल, समूह	
ब्रह्मन् = ब्रह्मा, आदिनाथ		सम = बराबर, साथ	
भव = महादेव, संसार		सवितृ = सूर्य, माता	
भानु = किरण, सूर्य		साधु = मुनि, स्पष्ट	
भास्कर = सूर्य, प्रतापी		सित = सफेद, घमण्डी	
मन्द = मूर्ख, देर		स्तब्ध = कड़ा, घमण्डी	
मरुत् = पर्वत, वायु		स्वामिन् = राजा, कार्तिकेय	
मरुत्सख = इन्द्र, अग्नि		हरि = बन्दर, विष्णु, इन्द्र, सिंह	
मेखला = पर्वतमध्य, करधोनी		हरित् = दिशा, हरा रंग	
यम = जोड़ा, काल		हिम = कपूर, बर्फ	
रक्त = खून, केशर, लालरंग		हृद्य = सुन्दर, मित्रता	

Scanned by CamScanner

महाकवि धनञ्जय

कविवर धनञ्जय द्वारा ही रचित द्विसंधान काव्य के अन्तिम पद्य से विदित होता है कि कविवर की माता का नाम श्रीदेवी, पिता का नाम वासुदेव और गुरु का शुभ नाम दशरथ था।

आपने द्विसंधान काव्य, विषापहार स्तोत्र और धनञ्जय-नाम-माला इन तीन ग्रन्थों की रचना की है। द्विसंधान काव्य का 'राघव-पाण्डवीय' नामान्तर भी है। नाममाला के पद्य नं. २०४ से स्पष्ट है कि यह धनञ्जय नाममाला धनञ्जय कवि द्वारा ही रचित है।

आपने अपने द्विसंधान काव्य में केवल जैन शास्त्रीय कथाओं का विवेचन किया है इससे आपका जैनत्व भी निर्विवाद है।

आपकी लेखनी अत्यधिक चमत्कार पूर्ण थी। आपने द्विसंधान महाकाव्य में इतनी अनूठी श्लेषात्मक रचना की है कि प्रत्येक पद्य से दो-दो अर्थ प्रकट होते हैं। जिससे राम और कृष्ण की दो सुसंगत विभिन्न कथाओं का सृजन होता है। एक ही पद्य से दो विभिन्न महा-पुरुषों की कथानक कहने वाला महाकाव्य अन्य सम्प्रदायों में भी आज तक दृष्टिगोचर नहीं हुआ। इस प्रकार के काव्य प्रबन्ध की रचना महाकवि धनञ्जय के ही सामर्थ्य की चीज है।

नाममाला की रचना करके तो आप गागर में सागर भरने की कहावत चरितार्थ कर गये हैं। इतना सरल, संक्षिप्त और सांगोपांग शब्दकोष कोई नहीं रच सका।

विषापहार के विषय में तो यों कहा जाता है कि एक बार आपके पुत्र को सर्प ने डस लिया था। उस समय आप जिनपूजन में मग्न थे। सर्प द्वारा पुत्र के डसे जाने का सम्वाद प्राप्त होने पर भी आप पूजन से विचलित नहीं हुए। पश्चात् आपने जब पूजन की समाप्ति की तब 'विषापहार" स्तोत्र रचा। तब जिनभक्ति के प्रभाव से आपका पुत्र निर्विष हुआ था।

Scanned by CamScanner

ख्रिस्ताब्द ८८४ तक काश्मीर में 'अवन्तिवर्मा' राजा राज्यासन रहे। उनके समय में 'ध्वन्यालोक' के कर्ता 'आनन्दवर्धन' कवि हुए हैं ? उन्होंने अपने ग्रन्थों में धनञ्जय कवि की स्तुति की है।

द्विसन्धाने निपुणतां, सतां चक्रे धनञ्जयः ।
यया जातं फलं तस्य, सतां चक्रे धनं जयः ॥

इस अर्थात् धनञ्जय (कवि और अर्जुन) ने द्विसन्धान (इस नाम के काव्य में और दोहरे निशाने लगाने) में जो निपुणता प्राप्त की, उसमें उन्हें कवि को और अर्जुन को) सज्जनों के समूह में धन और जय रूप फल प्राप्त हुआ।

जल्हण कवि आदि द्वारा संग्रहीत 'सूक्ति मुक्तावली' के प्राचीन कविवर्णन में यह पद्य आया है। उसका उल्लेख 'राजशेखर' कवि ने अपने ग्रन्थों में किया है। उसकी प्रशंसा पूज्य जैनाचार्य 'सोमदेव सूरि' ने अपने यशस्तिलक चम्पू में की है। इस चम्पू का निर्माण ख्रिस्ताब्द ९५९ में हुआ है। इस वर्णन से कविवर धनञ्जय का समय राजशेखर, रत्नाकर और आनन्दवर्धन कवि से पूर्व ८ वीं, ९ वीं शताब्दी के मध्य प्रतीत होता है।—द्विसन्धान काव्य।

श्री दि० जैन ग्रन्थ श्रीवीरसेन कृत धवलाटीका का निर्माण वि० सं० ८७३ में हुआ है। उसमें इति शब्द के अनेक अर्थ बतलाने के लिए इस नाममाला का 'हेतावेवं' इत्यादि पद्य उद्धृत किया गया है।

धनञ्जय कवि का ही बनाया 'नाममाला कोश' है। जिसमें उन्होंने अपने 'द्विसन्धान-काव्य' को, अकलंक के 'प्रमाण-शास्त्र' को और पूज्यपाद के लक्षण-शास्त्र को अपश्चिम (बेजोड़) कहा है। इससे यह तो स्पष्ट था, कि उक्त कोशकार धनञ्जय, पूज्यपाद और अकलंक के पश्चात् हुए हैं। किन्तु कितने पश्चात् हुए इसका निर्णय नहीं होता था। धवला के उक्त उल्लेख से प्रमाणित है कि—धनञ्जय का समय धवला की समाप्ति अर्थात् वि० सं० ८७३ से पूर्व है।

Scanned by CamScanner

नाममाला का प्रश्नपत्र

१—ग्रन्थकार की जीवनी, २—ग्रन्थकार के ग्रन्थान्तर, ३—नाममाला का अर्थ, ४—पद्यों का परिमाण, ५—अपूर्व रत्नत्रय, ६ग्रन्थकार का नाम, ७=मंगलाचरण का अर्थ, ८—मंगलाचरण में नमस्कृतवस्तु, केवलज्ञान का आधार क्या है ?

२—गो, हरि, क और अम्बर शब्द के सभी अर्थ बतलाइये। ३—अमुक-अमुक के अनेक स्थानीय सभी नाम (पर्याय) बताइये। ४—अमुक-अमुक के नाम सप्रमाण कहिये। ५—अमुक के नामों की सिर्फ संख्या कहिये। ६—अमुक शब्दों के लिंग बतलाइये। ७—अमुक शब्द में से अमुक पद निकालने से किसका नाम हो जाता है। ८—अमुक पद्य में सन्धियां तोड़िये। ९—अमुक रूप को व्याकरण से सिद्ध कीजिये १०—अमुक पद्य के आगे और पीछे के २-२ पद्य कहिये।

१२—पद्य नं० ७, ९, १६, २७, ४१, १०५, १२२, १३५, १८२, १८३ और १८४ का अर्थ बतलाइये।

१३ इस ग्रन्थ में किस-किस शब्द के मेल से किस-किसके नाम बनाये गये हैं केवल पांच का स्पष्टीकरण कीजिये।

१४ - उत्तराशापति। जिह्वाप। नागारि। अञ्जनात्मज। दिगम्बर। उडुपति। शीतदीधितिमत् और शत्रुगामुक ये नाम किस-किस कारण से रखे गये हैं।

१५ - निम्न वाक्यों के कठिन शब्दों को सरल करो। 'अन्तेवासी' 'कृतान्त' पढ़ते हैं। 'अग' पर 'प्लवग' बैठे हैं। 'अम्बर' में 'उडु' चमकते हैं। धर्म के माहात्म्य से 'मण्डल' भी 'मेन्द्र' हो जाता है। अभयदान में 'पांत्रि' प्रसिद्ध हुआ है। श्रीमानों को हमेशा 'रै' का सदुपयोग करना चाहिए। 'पुलोमारि' भगवान् का अभिषेक करते हैं। 'श्यामा' की शोभा 'कौमुदी' से है।

Scanned by CamScanner

सरल जैनग्रन्थ भण्डार जबलपुर का प्रकाशन

जैनधर्मप्रवेशिका प्रथमभाग १)
द्वि भाग १।।) तृ.२।।) चतुर्थभाग ६)
अहिंसादर्शन प्र. ४।। द्वि. ४।।)
छहढालामूल २) चौबीसठाना ६)
छहढाला मनोरमा टीका ५)
छहढाला विजया ५ सरलाटीका ४)
रत्नकरण्ड श्रावकाचार ७)
द्रव्य संग्रहसार्थ ४) जैनसि.प्रवेशिका ८)
मोक्षशास्त्र सार्थ सजिल्द १२)
नाममाला सार्थ ७)
परीक्षामुख सटीक ७)
संस्कृतशिक्षा प्रथम भाग ४) द्वितीय ४)
तृतीयभाग ५) चतुर्थभाग ५)
जैनव्रतकथा संग्रह १२) दशलक्षण २)
सम्यक्त्वकौमुदी १२) मुक्तावली १।।)
मोक्षमार्ग की सत्यकथाएं ७)
शीलकथा ३।।) दर्शनकथा ३।।)
दानकथा २) निशिभोजन २)
रविव्रतकथा १।।) सुगन्धदशमी १)
जैनभजनसंग्रह प्र. ५) द्वि भाग ५)
जैन फिल्मीभजन प्र ५) द्वि भा. ३)
अध्यात्मपदसंग्रह ५)
महिलागीत संग्रह ५)
शिवराम भजन ५) चालीसा १)
बरवाली १) साली १)

सत्यार्थयज्ञ १८) जैनपूजापाठ १२)
महावीरगुटका १२) विधानसंग्रह ७)
नन्दीश्वर विधान, वायनपूजा १५)
समवसरण विधान १०) नवग्रह ३।।)
भक्तामरमहामंडल ७) शांतिवि ५)
सोलहकारण १० दशलक्षणविधान ४।।)
रत्नत्रय विधान ६) कर्मदहन ४)
पंचमेरुनन्दीश्वरविधान ५)
पंचकल्याणक ५) पंचपरमेष्ठी ३।।)
निर्वाणविधान १।।) शिखरजी २)
आष्टाह्निकउद्या ४) रवि उद्या. २)
विवाहविधि हिन्दी ४) संस्कृत ४)
नवीन पूजा ४) नित्यपूजा ५)
दि. जैन संहिता पञ्चम भाग ६)
भक्तामर मोक्षशास्त्रपूजा ४)
सहस्रनामसार्थ ७) कल्याणमंदिर ६)
सूत्रभक्तामर सहस्रनाम ५) ३)
भक्तामरसार्थ २।।) भगवद्भक्ती ५)
अभिषेक पाठ हिन्दी ५) संस्कृत ५)
मेरीभावना २५) प्रतिशत, एकका २५)
निकलङ्कनाटक ४) महावीरनाटक २)
मुनिर्यामाह्रिबमेरे ३) प्रतिक्रमण ३)
जापहवनविधि ६) जैनमुक्तावली ५)
जैनलग्नपत्रिका १) हीरों का हार २)
मुनीमीशिक्षा ४)

सरल जैनग्रन्थ भण्डार, जवाहरगंज, जबलपुर म. प्र.।

Scanned by CamScanner

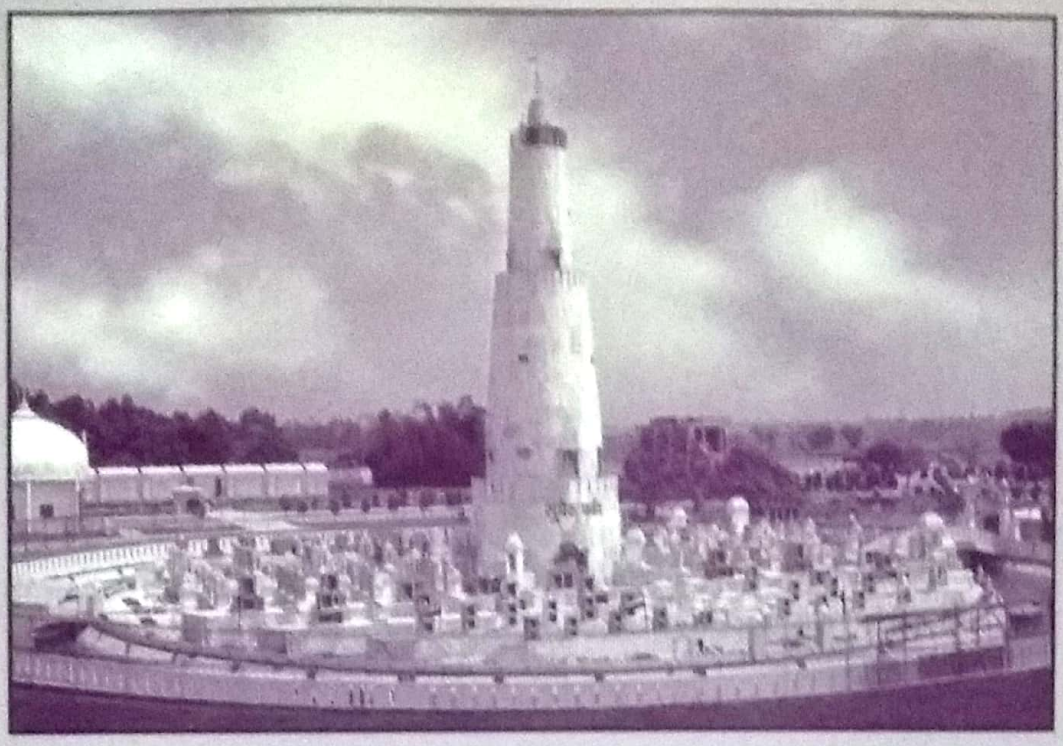

भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में निर्मित
विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप

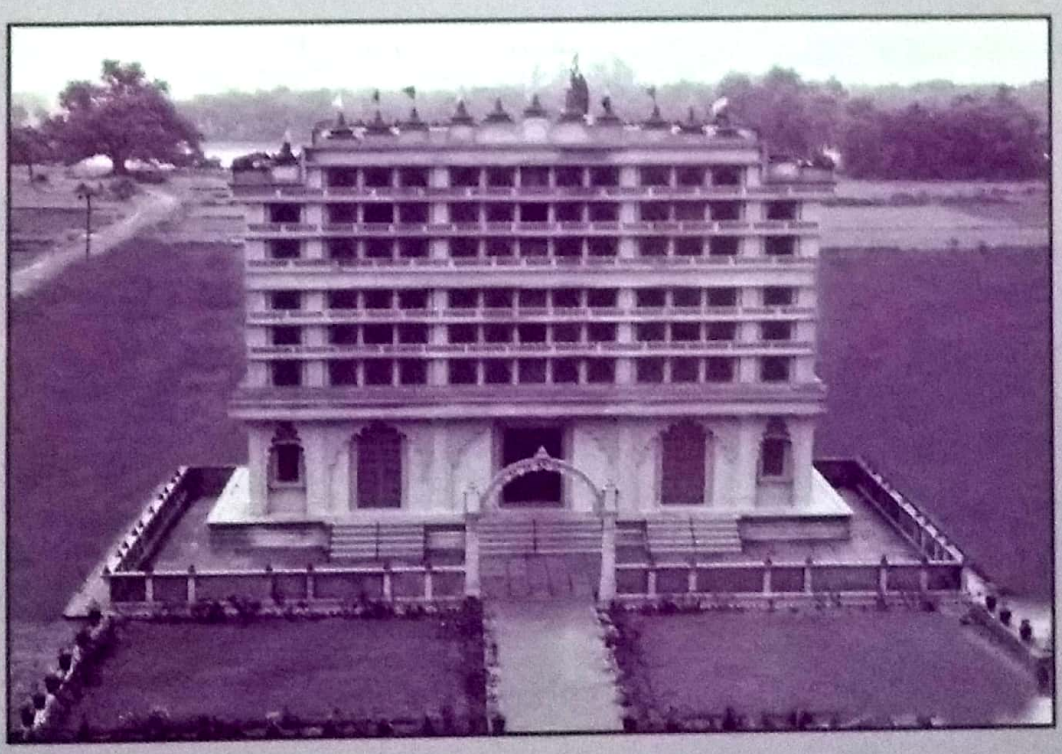

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में निर्मित नंद्यावर्त महल

978-93-84003-08-1

Scanned by CamScanner